RNI No. GUJHIN/2011/39228

GARVI GUJARAT

गरवी गुजरात

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 15
अंक : 347
दि. 20.04.2026,
सोमवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

इस्लामाबाद में निर्णायक दौर: ईरान-अमेरिका वार्ता का दूसरा चरण होर्मुज और परमाणु मुद्दे पर टकराव के बीच दुनिया की निगाहें

अमेरिका और ईरान के बीच बढ़ते तनाव और अस्थायी युद्धविराम की मियाद खत्म होने से ठीक पहले कूटनीतिक हलचल तेज हो गई है। अब दोनों देशों के बीच वार्ता का दूसरा और अहम दौर इस्लामाबाद में होने जा रहा है, जिसे न केवल क्षेत्रीय स्थिरता बल्कि वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए भी निर्णायक माना जा रहा है। पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने जानकारी दी है कि अमेरिकी प्रतिनिधिमंडल सोमवार को इस्लामाबाद पहुंचेगा। इस टीम में विशेष दूत स्टीव विटकॉफ और जेरेड कुशनर शामिल होंगे। हालांकि इस बार उपराष्ट्रपति जेडी वेंस को वार्ता से दूर रखा गया है, जिसे कूटनीतिक संकेतों के तौर पर भी देखा जा रहा है।

यह वार्ता ऐसे समय में हो रही है जब दोनों देशों के बीच घोषित अस्थायी युद्धविराम इस सप्ताह समाप्त होने वाला है। पिछले कुछ हफ्तों में हालात तेजी से बिगड़े हैं, खासकर होर्मुज जलडमरूमध्य को लेकर बढ़ते तनाव ने वैश्विक चिंता को चरम पर पहुंचा दिया है। यह वही रणनीतिक समुद्री मार्ग है, जहां से दुनिया के लगभग 20 प्रतिशत तेल की आपूर्ति होती है।

ईरान ने इस मुद्दे पर बेहद सख्त रुख अपनाते हुए साफ कर दिया है कि जब तक अमेरिका उसकी समुद्री नाकेबंदी जारी रखेगा, तब तक वह होर्मुज से अंतरराष्ट्रीय जहाजों को गुजरने की अनुमति नहीं देगा। ईरानी संसद के स्पीकर मोहम्मद बाघेर गालिबफ ने दो टूक शब्दों में कहा—"जब हम नहीं गुजर सकते, तो दूसरों के लिए भी यह संभव नहीं होगा।" ईरान के इस रुख ने वैश्विक ऊर्जा बाजार में अनिश्चितता बढ़ा दी है। तेल आपूर्ति में बाधा की आशंका से अंतरराष्ट्रीय बाजारों में पहले ही हलचल देखी जा रही है। हालिया घटनाओं में कुछ विदेशी और भारतीय जहाजों पर गोलीबारी की खबरों ने स्थिति को और

अधिक संवेदनशील बना दिया है। कई शिपिंग कंपनियों ने इस मार्ग से गुजरने में हिचकिचाहट दिखानी शुरू कर दी है, जिससे सप्लाई चेन प्रभावित हो रही है।

दूसरी ओर, डोनाल्ड ट्रंप ने अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'ट्रुथ सोशल' पर ईरान पर युद्धविराम के उल्लंघन का आरोप लगाया है। उन्होंने दावा किया कि ईरान ने फ्रांस और इंग्लैंड से जुड़े जहाजों पर गोलीबारी की है। ट्रंप ने चेतावनी देते हुए कहा कि यदि आगामी वार्ता में कोई ठोस समझौता नहीं हुआ, तो अमेरिका ईरान के पावर प्लांट और पुलों जैसे महत्वपूर्ण ढांचों को निशाना बना सकता है।

इस बीच, ईरान ने भी अपने रुख में कोई नरमी नहीं दिखाई है। ईरान के उप विदेश मंत्री सईद खतीबजादेह ने स्पष्ट किया है कि उनका देश अपने परमाणु कार्यक्रम पर किसी भी तरह का समझौता करने के लिए तैयार नहीं है। उन्होंने कहा कि ईरान अपना यूरेनियम अमेरिका को नहीं सौंपेगा और अमेरिकी प्रतिबंध तथा नाकेबंदी वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए गंभीर खतरा बन रहे हैं। यही दो मुद्दे—ईरान का परमाणु कार्यक्रम और होर्मुज पर नियंत्रण—इस वार्ता के सबसे बड़े और जटिल बिंदु बनकर उभरे हैं। जहां अमेरिका ईरान के परमाणु कार्यक्रम पर सख्त नियंत्रण चाहता है, वहीं ईरान इसे अपनी संप्रभुता और सुरक्षा से जुड़ा मामला मानता है।

इस पूरे घटनाक्रम में पाकिस्तान एक महत्वपूर्ण मध्यस्थ की भूमिका निभा रहा है। पाकिस्तान के विदेश मंत्री इशाक डार ने कहा है कि उनका देश दोनों पक्षों के बीच संवाद कायम रखने और समाधान खोजने की दिशा में "पुल" का काम कर रहा है। इस्लामाबाद को वार्ता स्थल के रूप में चुना जाना भी इस बात का संकेत है कि पाकिस्तान इस कूटनीतिक प्रक्रिया में सक्रिय भूमिका निभाना चाहता है।

हालांकि, अब तक यह स्पष्ट नहीं है कि ईरान का प्रतिनिधिमंडल पूरी तरह से इस वार्ता में शामिल होगा या नहीं। तसनीम न्यूज एजेंसी के मुताबिक, ईरान ने अभी तक औपचारिक रूप से अपने प्रतिनिधियों की भागीदारी पर अंतिम निर्णय नहीं लिया है। यह अनिश्चितता खुद इस वार्ता की सफलता पर सवाल खड़े कर रही है।

विश्लेषकों का मानना है कि यह बैठक केवल एक और कूटनीतिक औपचारिकता नहीं है, बल्कि यह एक ऐसे मोड़ पर हो रही है जहां से या तो तनाव कम हो सकता है या फिर हालात और अधिक बिगड़ सकते हैं। यदि वार्ता विफल होती है, तो इसका असर केवल मध्य-पूर्व तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि वैश्विक तेल बाजार, व्यापार और अंतरराष्ट्रीय संबंधों पर भी व्यापक प्रभाव पड़ेगा।

दुनिया की निगाहें अब इस्लामाबाद पर टिकी हैं। एक ओर जहां युद्धविराम की घड़ी टिक-टिक कर रही है, वहीं दूसरी ओर दोनों पक्ष अपने-अपने रुख पर अड़े हुए हैं। ऐसे में यह वार्ता केवल दो देशों के बीच समझौते का प्रयास नहीं, बल्कि वैश्विक स्थिरता की परीक्षा बन चुकी है।

आने वाले कुछ दिन यह तय करेंगे कि क्या कूटनीति तनाव पर भारी पड़ती है या दुनिया एक और बड़े संघर्ष की ओर बढ़ती है। फिलहाल, उम्मीद और आशंका—दोनों साथ-साथ चल रही हैं।

लुइसियाना में दिल दहला देने वाली वारदात: घरेलू हिंसा में 8 मासूमों की गोली मारकर हत्या, श्रेवेपोर्ट सहमा

श्रेवेपोर्ट की एक सुबह ऐसी त्रासदी में बदल गई, जिसने पूरे इलाके को शोक और सदमे में डुबो दिया। लुइसियाना के इस शहर में घरेलू हिंसा से जुड़ी गोलीबारी की एक भयावह घटना में 1 से 14 साल की उम्र के आठ बच्चों की निर्मम हत्या कर दी गई। यह खबर सामने आते ही पूरे अमेरिका में गहरा आक्रोश और दुख फैल गया है।

पुलिस के अनुसार, यह घटना एक ही जगह तक सीमित नहीं थी, बल्कि इसके सुराग तीन अलग-अलग स्थानों से मिले हैं। सुबह करीब 6 बजे वेस्ट 79वीं स्ट्रीट के 300 ब्लॉक से पुलिस को पहली कॉल मिली, जिसके बाद जब अधिकारी मौके पर पहुंचे, तो उन्हें स्थिति की गंभीरता का अंदाजा हुआ। शुरुआती जांच में सामने आया कि दो घरों के बीच और हैरिसन स्ट्रीट स्थित एक अन्य मकान भी इस पूरी वारदात से जुड़ा हुआ है।

श्रेवेपोर्ट पुलिस विभाग के कॉर्पोरल क्रिस बोर्डेलॉन ने बताया कि मारे गए बच्चों की उम्र महज 1 से 14 साल के बीच थी। इस जानकारी ने घटना को और भी अधिक दर्दनाक बना दिया, क्योंकि इतनी कम उम्र के मासूमों को निशाना बनाया जाना समाज के लिए गहरी चिंता का विषय है।

प्रारंभिक जांच में इस वारदात को

घरेलू हिंसा से जुड़ा बताया जा रहा है। हालांकि, पुलिस ने अभी तक हमलावर की पहचान सार्वजनिक नहीं की है और न ही यह स्पष्ट किया है कि वह पीड़ित परिवार से किस प्रकार जुड़ा हुआ था। जांच एजेंसियां हर पहलू से मामले की पड़ताल कर रही हैं, ताकि इस क्रूर अपराध के पीछे के कारणों को समझा जा सके। घटना के बाद आरोपी ने मौके से भागने की कोशिश की। पुलिस के मुताबिक, उसने एक कार छीनकर शहर से बाहर निकलने का प्रयास किया, लेकिन कानून प्रवर्तन एजेंसियों ने तेजी से कार्रवाई करते हुए उसका पीछा किया। शहर के पास ही पुलिस ने उसे घेर लिया, जहां मुठभेड़ के दौरान हुई गोलीबारी में हमलावर मारा गया।

इस पूरे घटनाक्रम ने एक बार फिर अमेरिका में बढ़ती घरेलू हिंसा और गन वायलेंस की गंभीर समस्या को उजागर कर दिया है। हर साल ऐसी घटनाएं सामने आती हैं, जहां पारिवारिक विवाद या मानसिक तनाव हिंसक रूप ले लेते हैं और निर्दोष लोगों की जान चली जाती है। इस बार भी सबसे ज्यादा नुकसान उन बच्चों को हुआ, जिनका इस विवाद से कोई लेना-देना नहीं था। स्थानीय समुदाय इस घटना के बाद गहरे सदमे में है। पड़ोसियों और आसपास के लोगों का कहना है कि उन्होंने कभी नहीं सोचा था कि उनके इलाके में इतनी भयावह घटना घट सकती है। कई लोग पीड़ित परिवार के लिए प्रार्थना कर रहे हैं और बच्चों की याद में श्रद्धांजलि सभाएं आयोजित की जा रही हैं। श्रेवेपोर्ट, जो लुइसियाना का तीसरा सबसे बड़ा शहर है और टेक्सास बॉर्डर के करीब स्थित है, इस घटना के बाद पूरी तरह सहमा हुआ है। स्थानीय प्रशासन और पुलिस ने लोगों से शांति बनाए रखने और अफवाहों से बचने की अपील की है। विशेषज्ञों का मानना है कि इस तरह की घटनाएं केवल कानून व्यवस्था का मुद्दा नहीं हैं, बल्कि यह सामाजिक और मानसिक स्वास्थ्य से भी जुड़ी हुई हैं। घरेलू हिंसा के मामलों में अक्सर चेतावनी संकेत पहले से मौजूद होते हैं, लेकिन उन्हें नजरअंदाज कर दिया जाता है। ऐसे में जागरूकता, समय पर हस्तक्षेप और मजबूत समर्थन प्रणाली बेहद जरूरी है।

इस घटना ने एक बार फिर यह सवाल खड़ा कर दिया है कि क्या समाज में हिंसा की जड़ें इतनी गहरी हो चुकी हैं कि अब घर भी सुरक्षित नहीं रह गए हैं। जब एक ही परिवार या घर के भीतर इस तरह की त्रासदी घटती है, तो यह केवल एक अपराध नहीं, बल्कि सामाजिक विफलता का संकेत भी बन जाती है। फिलहाल, पुलिस इस मामले की विस्तृत जांच में जुटी है। अधिकारियों का कहना है कि वे हर पहलू की जांच कर रहे हैं, जिसमें आरोपी की पृष्ठभूमि, मानसिक स्थिति और घटना से पहले की परिस्थितियां शामिल हैं। आने वाले दिनों में जांच से और तथ्य सामने आने की संभावना है। लेकिन इस सबके बीच सबसे बड़ा सवाल यही है कि उन आठ मासूमों की जिंदगी क्यों और कैसे इतनी बेरहमी से खत्म कर दी गई। यह घटना केवल आंकड़ों में दर्ज एक अपराध नहीं है, बल्कि यह एक ऐसी त्रासदी है, जो लंबे समय तक लोगों के दिल और दिमाग में बनी रहेगी।

"छेड़ोगे तो छोड़ेंगे नहीं": चेन्नई की रैली में राजनाथ सिंह का सख्त संदेश, सुरक्षा और चुनावी माहौल पर सीधा असर

राजनाथ सिंह ने तमिलनाडु के राधापुरम में चुनावी सभा को संबोधित करते हुए भारत की सुरक्षा नीति पर स्पष्ट, कड़ा और दो-टूक संदेश दिया। उनके बयान—"हम किसी को छेड़ते नहीं हैं, लेकिन अगर कोई हमें छेड़ता है तो हम उसे छोड़ते नहीं हैं"—ने न केवल सभा में मौजूद लोगों का ध्यान खींचा, बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर भी एक मजबूत राजनीतिक और रणनीतिक संकेत दिया।

सभा में बोलते हुए रक्षा मंत्री ने कहा कि भारत हमेशा से शांति का पक्षधर रहा है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि देश अपनी संप्रभुता और सुरक्षा के साथ किसी भी तरह का समझौता करेगा। उन्होंने इशारों में यह भी कहा कि जो लोग भारत की ताकत को कम आंकते हैं, उन्हें समय आने पर जवाब मिल जाता है। "थोड़ा इंतजार कीजिए, आपकी अपेक्षाएं जरूर पूरी होंगी," उनके इस बयान को भी एक सख्त चेतावनी के तौर पर देखा जा रहा है।

अपने भाषण में राजनाथ सिंह ने ऑपरेशन सिंदूर का उल्लेख करते हुए कहा कि भारत ने पहले भी आतंकवाद के खिलाफ निर्णायक कार्रवाई की है और आगे भी करता

रहेगा। यह बयान ऐसे समय में आया है, जब पहलगाम में हुए आतंकी हमले की पहली बरसी नजदीक है। 22 अप्रैल 2025 को हुए इस हमले ने पूरे देश को झकझोर दिया था, जिसमें 26 निर्दोष पर्यटकों की हत्या कर दी गई थी। इस घटना के बाद भारत ने कड़ा रुख अपनाते हुए सीमापार आतंकवादी ठिकानों को निशाना बनाया था। इस कार्रवाई में लश्कर-ए-तैयबा, जैश-ए-मोहम्मद और हिजबुल मुजाहिदीन से जुड़े कई ठिकानों को ध्वस्त किया गया था।

रक्षा मंत्री ने अपने संबोधन में यह भी रेखांकित किया कि भारत की सैन्य ताकत लगातार बढ़ रही है और देश अब पहले से कहीं अधिक सक्षम और आत्मनिर्भर बन चुका है। उन्होंने कहा कि सरकार का स्पष्ट उद्देश्य है—देश की सीमाओं की सुरक्षा और नागरिकों की रक्षा के लिए हर जरूरी कदम उठाना।

यह बयान ऐसे समय में आया है, जब तमिलनाडु में विधानसभा चुनाव का माहौल गरम है। राज्य की 234 सीटों के लिए 23 अप्रैल को मतदान होना है, जबकि नतीजे 4 मई को घोषित किए जाएंगे। ऐसे में रक्षा मंत्री का यह बयान केवल राष्ट्रीय सुरक्षा तक सीमित नहीं, बल्कि इसका राजनीतिक संदर्भ भी महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

विश्लेषकों का मानना है कि इस तरह के सख्त बयान चुनावी माहौल में मतदाताओं को यह संदेश देने का काम करते हैं कि सरकार राष्ट्रीय सुरक्षा के मुद्दे पर कोई समझौता नहीं करती। यह रणनीति अक्सर उन क्षेत्रों में प्रभावी होती है, जहां राष्ट्रीय सुरक्षा और देशभक्ति जैसे मुद्दे चुनावी विमर्श का हिस्सा बन जाते हैं।

सभा में मौजूद लोगों ने भी रक्षा मंत्री के इस बयान का जोरदार समर्थन किया। उनके भाषण के दौरान कई बार तालियों और नारों की गूंज सुनाई दी, जो यह दर्शाती है कि उनके शब्दों का सीधा प्रभाव जनता पर पड़ा।

राजनाथ सिंह ने अपने संबोधन में यह भी स्पष्ट किया कि भारत की नीति हमेशा संतुलित रही है—जहां एक ओर देश शांति और संवाद में विश्वास रखता है, वहीं दूसरी ओर वह अपनी सुरक्षा के प्रति पूरी तरह सजग और प्रतिबद्ध है।

उनका यह बयान केवल एक राजनीतिक भाषण नहीं, बल्कि एक व्यापक संदेश के रूप में देखा जा रहा है—जिसमें राष्ट्रीय सुरक्षा, आतंकवाद के खिलाफ सख्त रुख और चुनावी रणनीति तीनों का मिश्रण दिखाई देता है।

लिंबायत की रैली में ओवैसी का तीखा हमला: "बंटवारे के लिए मुसलमान नहीं, कांग्रेस जिम्मेदार BJP को रोकना है तो AIMIM को मजबूत करो"

असदुद्दीन ओवैसी ने गुजरात के लिंबायत में आयोजित जनसभा में अपने संबोधन के दौरान राष्ट्रीय राजनीति, इतिहास और चुनावी रणनीति पर एक साथ तीखे बयान दिए। उनके भाषण का केंद्र न केवल मौजूदा राजनीतिक समीकरण रहे, बल्कि उन्होंने देश के बंटवारे के मुद्दे को भी उठाते हुए कांग्रेस पर सीधा निशाना साधा।

सभा में बड़ी संख्या में मौजूद लोगों को संबोधित करते हुए ओवैसी ने कहा कि वोट केवल एक अधिकार नहीं, बल्कि एक "अमानत" है, जिसे सोच-समझकर इस्तेमाल करना चाहिए। उन्होंने युवाओं से विशेष तौर पर अपील करते हुए कहा कि यदि कोई समाज अपनी आवाज बुलंद करना चाहता है, तो उसे अपना नेतृत्व खुद तैयार करना होगा। "याद रखो, नौजवानों बात उसी की सुनी जाती है, जिसका लीडर होता है," उन्होंने कहा, और इस बात पर जोर दिया कि बिना राजनीतिक प्रतिनिधित्व के किसी भी समुदाय की आवाज प्रभावी नहीं हो सकती।

ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन प्रमुख ने अपने भाषण में भारतीय जनता पार्टी और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस दोनों पर निशाना साधते हुए कहा कि यह धारणा गलत है कि कांग्रेस को वोट देने से भाजपा को रोका जा सकता है। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा, "अगर आप सोचते हैं कि कांग्रेस को वोट देकर BJP को हराया जा सकता है, तो यह आपकी भूल है। BJP को अगर कोई रोक सकता है, संविधान के दायरे में रहकर, आंख में आंख डालकर उनसे हमारे अधिकार मनवा सकता है, तो वह AIMIM है।"

ओवैसी का यह बयान उस राजनीतिक

बहस को और तेज करता है, जिसमें यह सवाल उठता रहा है कि विपक्षी वोटों का बंटवारा किस हद तक सत्तारूढ़ दल को फायदा पहुंचाता है। इस पर जवाब देते हुए उन्होंने अपने ऊपर लगने वाले आरोपों का भी जिक्र किया। उन्होंने कहा कि अक्सर यह कहा जाता है कि जहां-जहां AIMIM चुनाव लड़ती है, वहां BJP को फायदा होता है।

अपने तर्क को मजबूत करने के लिए उन्होंने पश्चिम बंगाल का उदाहरण दिया। उन्होंने कहा कि वहां कांग्रेस 294 सीटों पर चुनाव लड़ती है, तृणमूल कांग्रेस 294 सीटों पर, लेफ्ट फ्रंट करीब 250 सीटों पर और BJP भी लगभग सभी सीटों पर चुनाव लड़ती है, जबकि AIMIM केवल 11 सीटों पर मैदान में उतरती है। "उन्हें मेरे 11 सीटों पर चुनाव लड़ने से दिक्कत है, लेकिन 270 सीटें जीतकर BJP को हराने की बात कोई नहीं करता," उन्होंने कहा।

ओवैसी ने इस दौरान यह भी सवाल उठाया कि आखिर कब तक एक खास समाज को अपना स्वतंत्र राजनीतिक नेतृत्व खड़ा करने से रोका जाएगा। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र में हर समुदाय को अपनी राजनीतिक पहचान और नेतृत्व विकसित करने का अधिकार है, और इसे कमजोर करना लोकतांत्रिक मूल्यों के खिलाफ है।

अपने भाषण के सबसे चर्चित हिस्से में उन्होंने देश के बंटवारे के मुद्दे को उठाया। ओवैसी ने कहा कि यह कहना गलत है कि भारत के विभाजन के लिए मुसलमान जिम्मेदार थे। उन्होंने इस संदर्भ में मौलाना अबुल कलाम आज़ाद की किताब India Wins Freedom का हवाला देते हुए कहा कि मौलाना आजाद ने स्वयं लिखा है कि उन्होंने महात्मा गांधी और जवाहरलाल नेहरू से भारत का विभाजन रोकने की अपील की थी।

इस बयान के जरिए ओवैसी ने कांग्रेस की ऐतिहासिक भूमिका पर सवाल उठाए और यह संदेश देने की कोशिश की कि इतिहास को एकतरफा तरीके से नहीं देखा जाना चाहिए। उनके इस बयान ने राजनीतिक गलियारों में नई बहस को जन्म दे दिया है, जहां इतिहास, जिम्मेदारी और वर्तमान राजनीति के बीच संबंधों को लेकर चर्चा तेज हो गई है।

सभा के दौरान ओवैसी ने बार-बार इस बात पर जोर दिया कि यह समय "खड़े होने" और अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाने का है। उन्होंने कहा कि जब तक कोई समाज खुद को राजनीतिक रूप से संगठित नहीं करेगा, तब तक उसकी समस्याएं और मुद्दे हाशिये पर ही बने रहेंगे।

उनका पूरा भाषण इस संदेश के इर्द-गिर्द घूमता रहा कि लोकतंत्र में भागीदारी केवल वोट डालने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह अपने अधिकारों की मांग करने और अपनी आवाज को मजबूत करने का माध्यम भी है। उन्होंने लोगों से अपील की कि वे अपने वोट का इस्तेमाल सोच-समझकर करें और ऐसे नेतृत्व को चुनें, जो उनके मुद्दों को मजबूती से उठाए।

गुजरात में AIMIM की सक्रियता को लेकर भी यह रैली महत्वपूर्ण मानी जा रही है। लिंबायत जैसे क्षेत्रों में ओवैसी की सभाएं यह संकेत देती हैं कि उनकी पार्टी राज्य में अपने राजनीतिक आधार को मजबूत करने की कोशिश कर रही है।

इस पूरे घटनाक्रम के बीच यह साफ है कि ओवैसी के बयान केवल चुनावी रणनीति तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे राष्ट्रीय स्तर पर राजनीतिक विमर्श को भी प्रभावित करने की कोशिश कर रहे हैं। उनके भाषण ने एक बार फिर यह दिखा दिया है कि भारतीय राजनीति में पहचान, प्रतिनिधित्व और इतिहास जैसे मुद्दे आज भी कितने प्रासंगिक हैं।

अब यह देखना दिलचस्प होगा कि उनके इन बयानों का गुजरात की राजनीति और व्यापक राष्ट्रीय राजनीतिक परिदृश्य पर क्या असर पड़ता है, लेकिन इतना तय है कि लिंबायत की यह रैली आने वाले दिनों में राजनीतिक चर्चा का केंद्र बनी रहेगी।

संपादकीय

वैश्विक राजनीति का व्यंग्य: जब 'पनौती' बन जाता है कूटनीति का नैरेटिव

अंतरराष्ट्रीय राजनीति को आमतौर पर गंभीरता, रणनीति और शक्ति संतुलन के नजरिए से देखा जाता है, लेकिन इसके भीतर एक ऐसा अनकहा संसार भी चलता रहता है, जहां व्यंग्य, तंज और छवि-निर्माण की अदृश्य लड़ाई जारी रहती है। हाल के समय में अमेरिकी राजनीति में जो दिलचस्प चर्चा उभरी है, उसने इस छिपे हुए पहलू को खुलकर सामने ला दिया है। यह चर्चा किसी नीति या युद्ध की नहीं, बल्कि एक व्यक्ति की छवि को लेकर है—और वह छवि है 'पनौती' की। इस संदर्भ में जेडी वैंस का नाम तेजी से सुर्खियों में आया है।

कहानी की शुरुआत उन घटनाओं से होती है, जिन्हें सामान्य परिस्थितियों में महज संयोग माना जाता। लेकिन राजनीति में संयोग भी अक्सर कहानी बन जाते हैं। जब जेडी वैंस किसी महत्वपूर्ण दौरे पर जाते हैं और उसके बाद नतीजे उम्मीद के विपरीत आते हैं, तो विरोधियों के लिए यह एक मौका बन जाता है। इसी तरह की कुछ घटनाओं को जोड़कर एक ऐसा नैरेटिव तैयार किया गया, जिसमें वैंस को 'अपशकुन' या 'पनौती' के रूप में चित्रित किया जाने लगा। यहां गौर करने वाली बात यह है कि 'पनौती' जैसे शब्द का इस्तेमाल, जो भारतीय सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ में अधिक प्रचलित है, अब अमेरिकी राजनीतिक विमर्श में भी दिखाई देने लगा है। यह केवल भाषाई बदलाव नहीं, बल्कि उस मानसिकता का संकेत है, जहां जटिल राजनीतिक घटनाओं को सरल और भावनात्मक प्रतीकों में बदल दिया जाता है। इससे आम जनता के लिए मुद्दों को समझना आसान हो जाता है, लेकिन साथ ही यह वास्तविकता को भी धुंधला कर देता है। इस पूरे घटनाक्रम में डोनाल्ड ट्रंप का नाम भी अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ है। ट्रंप, जो अपने समर्थकों और विरोधियों दोनों के बीच एक मजबूत छवि रखते हैं, ने वैंस को कई बार अपना करीबी सहयोगी बताया है। ऐसे में जब वैंस को लेकर नकारात्मक धारणा बनती है, तो उसका असर ट्रंप के राजनीतिक दायरे पर भी पड़ता है। हालांकि, ट्रंप की राजनीति में विवाद और आलोचना कोई नई बात नहीं है, और वे अक्सर इन परिस्थितियों को अपने पक्ष में मोड़ने में माहिर रहे हैं। इसी कड़ी में विक्टर ऑर्बान का जिक्र भी आता है। जब वैंस उनके समर्थन में सक्रिय दिखे और परिणाम अपेक्षित नहीं रहे, तो इस घटना को भी उसी 'पनौती' वाले नैरेटिव में जोड़ दिया गया। यह बताता है कि कैसे अलग-अलग घटनाओं को एक सूत्र में पिरोकर एक बड़ी कहानी बनाई जाती है, भले ही उनके बीच कोई ठोस संबंध न हो।

आज के डिजिटल युग में इस तरह के नैरेटिव को फैलाने में सोशल मीडिया की भूमिका बेहद अहम है। ट्विटर, इंस्टाग्राम और यूट्यूब जैसे प्लेटफॉर्म पर मीम्स और व्यंग्यात्मक वीडियो के जरिए किसी भी विचार को तेजी से फैलाया जा सकता है। जेडी वैंस के मामले में भी यही हुआ। कुछ ही दिनों में वे एक गंभीर राजनीतिक व्यक्तित्व से हटकर मजाक और तंज का विषय बन गए। यह बदलाव केवल उनके लिए ही नहीं, बल्कि पूरी राजनीतिक प्रक्रिया के लिए एक संकेत है कि अब छवि का खेल पहले से कहीं ज्यादा तेज और प्रभावशाली हो चुका है।

लेकिन इस पूरे मामले का एक दूसरा पहलू भी है, जिस पर कम ध्यान दिया जाता है। क्या वास्तव में किसी व्यक्ति को 'पनौती' कहना उचित है? क्या यह लोकतांत्रिक मूल्यों के अनुरूप है? एक स्वस्थ लोकतंत्र में नेताओं का मूल्यांकन उनके कार्यों, नीतियों और निर्णयों के आधार पर होना चाहिए, न कि संयोगों या अंधविश्वासों के आधार पर। जब हम किसी नेता को इस तरह के टैग से जोड़ते हैं, तो हम अनजाने में राजनीतिक चर्चा के स्तर को भी नीचे ले जाते हैं। इसके अलावा, इस तरह के नैरेटिव का एक मनोवैज्ञानिक प्रभाव भी होता है। जब बार-बार किसी व्यक्ति को नकारात्मक रूप में प्रस्तुत किया जाता है, तो धीरे-धीरे वह छवि लोगों के दिमाग में स्थायी हो जाती है। भले ही उसमें सच्चाई कम हो, लेकिन उसकी धारणा मजबूत हो जाती है। यही कारण है कि राजनीतिक दल और उनके रणनीतिकार छवि-निर्माण पर इतना जोर देते हैं।

थलापति की एंट्री से त्रिकोण में उलझी तमिल राजनीति

> विजय थलापति यानी कमांडर के नाम से जाने जाते हैं। विजय को लेकर दोनों गठबंधनों में खींचतान रही। लेकिन विजय ने अकेले ही चुनाव लड़ने का फैसला किया। तमिलनाडु मे वह कितनी सीटें जीत पाए यह कयास ही लग सकता है लेकिन वह दोनों गठबंधनों मे किसी एक का समीकरण बिगाड़ने में सक्षम हैं।

तमिलनाडु की जनता को 23 अप्रैल को जनादेश देना है। तमिलनाडु की परंपरागत सियासत से हटकर इस बार स्थिति में काफी असमंजस है। तमिलनाडु की राजनीति के दो बड़े ध्रुव डीएमके और अन्ना द्रमुक का आपसी संघर्ष इस बार अलग तरह के त्रिकोण में फंसा है। राज्य की राजनीति पर प्रभाव रखने वाले दोनों ही बड़े दलों के गठबंधन में छोटी पार्टियों के अदल-बदल की प्रक्रिया स्वाभाविक रूप से होती रही है। लेकिन इस बार के त्रिकोण में फिल्म से राजनीति में आए जोसेफ विजय चंद्रशेखर ने अपनी नई पार्टी टीवीके को सभी सीटों पर चुनाव लड़ाकर तमिल राजनीति को अलग आयाम दे दिया है।

डीएमके के साथ इस समय कांग्रेस सहित 22 पार्टियां चुनाव मैदान में हैं। द्रमुक ने अन्ना द्रमुक के तपे तपाए नेता प्लानी स्वामी को अपने साथ जोड़कर पहला पासा फेंका है। डीएमके ने एआईडीएमके के दस साल पुराने शासन को समाप्त कर सत्ता हासिल की थी। उस समय प्लानीस्वामी ही राज्य के मुख्यमंत्री थे। अन्ना द्रमक की नेता जयललिता के निधन के बाद अन्ना द्रमुक के आंतरिक झगड़ों का लाभ द्रमुक ने भरपूर उठाया । विधानसभा चुनाव की शानदार सफलता को उसने लोकसभा में भी दोहराया। राज्य में अन्ना द्रमुक और सहयोगी बीजेपी कोई सीट हासिल नहीं कर सकी। स्टालिन ने प्रचार के परंपरागत तरीके बदले । केंद्र से भाषा और अधिकार की बात पर सीधा टकराव करके अपने को तमिल हितों का रक्षक बताने की कोशिश की। कलेग्नार मगलीर उरीमाई थिट्टम, महिलाओं को मुफ्त बस यात्रा, सीएम

ब्रेक फास्ट स्कीम, गैस सब्सिडी जैसी योजनाएं चलाकर उन्होंने जनता को साधने की कोशिश की।

तमिल क्षेत्रीय भावनाओं को उभारने के लिए हिंदी विरोध के पुराने राग को छेड़ते हुए स्टालिन काफी आगे निकल गए। त्रिभाषा फार्मूले पर द्रमुक ने लोगों को जमकर उकसाने की कोशिश की। संकीर्ण राजनीतिक कारणों से हिंदी विरोध की जड़ों को जमकर सींचा गया। द्रमुक अहसास कराती रही है कि बीजेपी बाहरी पार्टी है। द्रमुक के लिए इस बार के चुनाव कई मायनों में आसान नहीं हैं। स्टालिन द्वारा अपने बेटे उदयनिधि को डिप्टी सीएम बनाने और सियासत में उभारने की कोशिशों के चलते पार्टी में छिपा आंतरिक विरोध दिखता है। द्रमुक सरकार के कई मंत्री भ्रष्टाचार के आरोपों में घिरे रहे हैं। सत्ता विरोधी माहौल में नशीले पदार्थ का मुद्दा आग में घी का काम कर रहा है।

कांग्रेस की राज्य में 1967 के बाद से अपनी सरकार नहीं बन सकी। भक्तवत्सलम राज्य के आखिरी कांग्रेसी मुख्यमंत्री थे। अन्ना दुरई के नेतृत्व में डीएमके ने कांग्रेस को पराजित किया था। इसके बाद तमिलनाडु में राष्ट्रीय पार्टियां उभर नहीं पाईं। इस दौर में कांग्रेस द्रमुक के साथ मिलकर चुनाव तो लड़ती है लेकिन द्रमुक सत्ता में उसकी भागेदारी नहीं होने देता। द्रमुक और कांग्रेस के बीच इस बार का गठबंधन बहुत गर्मजोशी के साथ नहीं हुआ। लेकिन कांग्रेस को अहसास है कि लोकसभा में उसकी 99 सीटों में तमिलनाडु की नौ सीटों का अपना महत्व है। इसलिए कांग्रेस दक्षिण के इस प्रमुख राज्य में अन्ना द्रमुक और बीजेपी को आगे बढ़ने से रोकने के लिए द्रमुक का साथ देती है। तमिलनाडु में 234 सीटों में द्रमुक ने 164 सीटें अपने पास रखी है। कांग्रेस को पिछली बार से तीन ज्यादा 28 सीटें दी गई हैं। विजयकांत की पार्टी डीएमडीके को 10 सीटें दी गई हैं। सीपीआई और सीपीआईएम को पांच पांच सीटें दी गई हैं।

लोकसभा चुनाव की तरह इस बार भी अन्ना द्रमुक और बीजेपी के बीच गठबंधन को लेकर लंबा मंथन हुआ। लेकिन जयललिता के निधन के बाद लगातार कमजोर हो रही अन्ना द्रमुक के लिए यह चुनाव काफी अहम है। अन्ना द्रमुक ने बीजेपी को 27 सीटें दी हैं। पीएमके 18 एएमएमके 11 टीएमसी एम कमल के चिन्ह पर पांच सीटों पर लड़ रही है।

तमिलनाडु की दोनों पार्टियां द्रमुक और अन्ना द्रमुक द्रविड़ अस्मिता को लेकर एक लाइन रही हैं। गौरतलब है कि जयललिता के समय अन्ना द्रमुक के घोषणापत्र में राम मंदिर का जिक्र भी था। अन्ना द्रमुक द्रविड़ अस्मिता और गौरव की बात तो करती है लेकिन मुद्दों पर बहुत आक्रामक नहीं होती।

वर्ष 2004 से पहले द्रमुक एनडीए का हिस्सा था। बीजेपी की सियासी भूल में इस बात को शामिल किया जाता है कि अगर द्रमुक को एनडीए से अलग नहीं किया होता तो बीजेपी की सरकार नहीं गिरती। बीजेपी की लुक साउथ नीति में तमिलनाडु में अपना प्रभाव धीरे-धीरे बढ़ाने की लक्ष्य है। बीजेपी ने दक्षिण भारत में अपना प्रभाव बढ़ाने के लिए काशी तमिल संगमम तमिल भाषा प्रचार जैसे कुछ चीजों पर फोकस किया।

जोसेफ विजय चंद्रशेखर ने अपनी पार्टी तमिलगा वेत्री कड़गम यानी टीवीके के सभी 239 सीटों पर उम्मीदवार उतारे हैं। वह स्वयं पेरंबूर और तिरुचिपल्ली दो सीटों पर लड़ रहे हैं। टीवीके ने 27 टिकट महिलाओं को दिए हैं। विजय थलापति यानी कमांडर के नाम से जाने जाते हैं। विजय को लेकर दोनों गठबंधनों में खींचतान रही। लेकिन विजय ने अकेले ही चुनाव लड़ने का फैसला किया। तमिलनाडु मे वह कितनी सीटें जीत पाए यह कयास ही लग सकता है लेकिन वह दोनों गठबंधनों मे किसी एक का समीकरण बिगाड़ने में सक्षम हैं। राज्य में सत्ता के विरोध का जो माहौल है उसमें मतदाता उन्हें विकल्प देखता है तो एनडीए के लिए मुश्किल होगी।

प्रेरणा

अल्फ़ाज़ का उजाला: वसीम बरेलवी और उनकी रौशन विरासत

अदब की दुनिया में कुछ शख्सियतें ऐसी होती हैं, जिनका जिक्र आते ही एक पूरी तहज़ीब, एक संवेदनशील सोच और इंसानियत की खुशबू साथ चलने लगती है। वसीम बरेलवी उन्हीं दुर्लभ शायरों में से एक हैं, जिनकी शायरी केवल शब्दों का संयोजन नहीं, बल्कि एहसासों का एक जीवंत संसार है। उनके कलाम में जो मिठास, सादगी और गहराई है, वह उन्हें भीड़ से अलग खड़ा करती है। यही कारण है कि उनकी शायरी भारत की सीमाओं से निकलकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी उतनी ही पसंद की जाती है।

वसीम बरेलवी की शायरी की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह दिल से निकलती है और सीधे दिल तक पहुंचती है। उनके अशआर में जीवन की सच्चाइयों का ऐसा प्रतिबिंब मिलता है, जो हर व्यक्ति को अपने अनुभवों से जोड़ देता है। वे मोहब्बत की बात करें या जुदाई का दर्द बयान करें, हर जगह एक सच्चाई और ईमानदारी नजर आती है। यही वजह है कि उनकी शायरी सुनने वाला हर शख्स खुद को उसमें कहीं न कहीं पाता है।

उत्तर प्रदेश के बदायूं की मिट्टी से निकले इस महान शायर ने जिस तरह अपनी पहचान बनाई, वह अपने आप में एक प्रेरणादायक यात्रा है। छोटे शहर से निकलकर राष्ट्रीय और फिर अंतरराष्ट्रीय मंच तक पहुंचना आसान नहीं होता, लेकिन वसीम बरेलवी ने अपनी मेहनत, प्रतिभा और सच्चाई के बल पर यह मुकाम हासिल किया। उनकी शायरी में जो सहजता और सादगी है, वही उनकी सबसे बड़ी ताकत है।

उनकी लोकप्रियता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि उनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर केंद्रित विशेषांक बार-बार प्रकाशित होते रहे हैं। बदायूं की साहित्यिक पत्रिका 'लम्हें-लम्हें' ने 1996 में पहला विशेषांक प्रकाशित किया, जो अपने आप में एक अनोखी पहल थी। इसके बाद 2006 और 2008 में दोबारा उसी विषय पर विशेषांक प्रकाशित होना यह दर्शाता है कि वसीम बरेलवी का जादू समय के साथ कम नहीं हुआ, बल्कि और गहराता गया।

हाल ही में प्रकाशित 'वसीम बरेलवी : जहां रहेगा रौशनी लुटाएगा' शीर्षक विशेषांक इस परंपरा को आगे बढ़ाता है। यह केवल एक पुस्तक नहीं, बल्कि एक दस्तावेज़ है, जो एक शायर के जीवन, उनके संघर्ष और उनकी उपलब्धियों को संजोकर रखता है। इस संकलन में देश के नामी साहित्यकारों, शायरों और बुद्धिजीवियों की 58 रचनाएं शामिल हैं, जो उनके व्यक्तित्व और कृतित्व के विभिन्न पहलुओं को उजागर करती हैं।

इस पुस्तक का संयोजन साहित्य प्रेमी नीरज जैन ने किया है और संपादन फारुक अर्गली ने। दोनों ने मिलकर इस संकलन को इस तरह तैयार किया है कि यह पाठकों के लिए एक भावनात्मक और बौद्धिक अनुभव बन जाए। खास बात यह है कि इसमें 'वसीम की कहानी वसीम की जबानी' शीर्षक से एक साक्षात्कार भी शामिल है, जिसे हसीब सोज़ ने प्रस्तुत किया है। इस साक्षात्कार में वसीम बरेलवी ने अपने जीवन के कई अनछुए पहलुओं को साझा किया है, जो पाठकों को उनके और करीब ले जाता है।

अगर हम उनके व्यक्तित्व की बात करें, तो उसमें एक अद्भुत आत्मीयता और विनम्रता दिखाई देती है। वे अपने चाहने वालों के साथ जिस तरह का रिश्ता रखते हैं, वह आज के समय में बहुत कम देखने को मिलता है। नीरज जैन के साथ उनका संबंध इसका एक बेहतरीन उदाहरण है। 2023 में एक कार हादसे के बाद नीरज जैन ने जिस तरह उनकी सेवा की, उसे उन्होंने अपने बेटे के समान बताया। यह प्रसंग केवल एक घटना नहीं, बल्कि उनके दिल की गहराई और रिश्तों की अहमियत को दर्शाता है। इस संकलन में महान शायर फ़िराक़ गोरखपुरी की अभिव्यक्ति भी शामिल है, जो 'मेरा महबूब शायर' शीर्षक से प्रस्तुत की गई है। फ़िराक़ गोरखपुरी जैसे दिग्गज शायर द्वारा की गई यह सराहना अपने आप में बहुत बड़ी बात है। वे कहते हैं कि वसीम की शायरी में ज्ञान और विवेक की ऐसी गहराई है, जो पाठक को केवल सोचने पर मजबूर नहीं करती, बल्कि उसे महसूस करने का अवसर भी देती है।

वसीम बरेलवी की शायरी की खासियत यह भी है कि वह समय के साथ पुरानी नहीं होती। उनके अल्फ़ाज़ हर दौर में उतने ही प्रासंगिक लगते हैं, जितने अपने समय में थे। चाहे वह मोहब्बत का इज़हार हो, समाज की विसंगतियों पर टिप्पणी हो या जीवन के दर्शन की बात—हर जगह उनकी पकड़ मजबूत और प्रभावशाली है।

इस विशेषांक में शामिल रंगीन चित्र भी उनकी यात्रा को जीवंत बना देते हैं। ये चित्र केवल तस्वीरें नहीं, बल्कि उनके जीवन के अलग-अलग पड़ावों के साक्षी हैं। इन्हें देखकर पाठक उनके जीवन को एक नए नजरिए से समझ पाता है।

डब्ल्यू.बी.एस फाउंडेशन के तत्वावधान में प्रकाशित यह संग्रहणीय अंक अदब प्रेमियों के लिए एक अनमोल धरोहर है। यह केवल एक शायर को समर्पित पुस्तक नहीं, बल्कि उस पूरी परंपरा का सम्मान है, जिसने हिंदी और उर्दू साहित्य को समृद्ध बनाया है।

अंततः, वसीम बरेलवी केवल एक शायर नहीं, बल्कि एक विचार, एक एहसास और एक रौशनी हैं। उनकी शायरी आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी रहेगी। जब भी अदब की बात होगी, उनका नाम सम्मान और प्रेम के साथ लिया जाएगा, क्योंकि सच यही है—जहां रहेगा, रौशनी लुटाएगा।

महिला कोटे से जुड़े संविधान बिल के लुढ़कने के सियासी निहितार्थ

इंडिया गठबंधन की विपक्षी एकजुटता ने पुनः सत्ताधारी गठबंधन एनडीए की नींद उड़ा दी है। ऐसा इसलिए कि लोकसभा में संविधान (131वां संशोधन) विधेयक 2026, जो लोकसभा और विधानसभाओं में महिलाओं के लिए 33% आरक्षण लाने से जुड़ा था, 16 अप्रैल 2026 को वोटिंग में गिर गया। इसके पक्ष में 298 और विपक्ष में 230 वोट पड़े, जबकि न्यूनतम दो-तिहाई बहुमत (लगभग 352 वोट) की आवश्यकता थी, जो सरकार के रणनीतिकारों ने नहीं जुटा पाए। शायद पहली बार सदन में अमित शाह की रणनीति पिट गई। इसका राजनीतिक प्रभाव यह रहा कि मोदी सरकार के लिए 12 साल में पहली बड़ी संवैधानिक हार हुई है, जो विपक्ष की एकजुटता को दर्शाता है। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने इसे "संविधान पर हमला" बताकर कांग्रेस-विपक्ष की रणनीति की जीत घोषित की, जबकि भाजपा इसे विपक्ष विरोधी हथियार बनाने की योजना बना रही है। एक सत्ता विरोधी रणनीति के तहत जहां विपक्ष ने बिल को "छलावा" करार दिया, वहीं दावा किया कि यह परिसीमन और चुनावी नक्शा बदलने की साजिश है। वहीं, एक एनडीए नेता के अनुसार, बिल गिरने से सरकार अब सड़क पर विपक्ष को महिलाओं के अधिकारों के नाम पर घेरेगी।

हालांकि, सरकार ने शेष दो बिल (परिसीमन और अन्य) आगे नहीं बढ़ाए, क्योंकि वे मुख्य बिल पर निर्भर थे। एचएम अमित शाह और पीएम मोदी विपक्ष के विरोध को कांग्रेस के इतिहास से जोड़कर जनता में प्रचार करेंगे। यह 2029 चुनावों से पहले राजनीतिक ध्रुवीकरण तेज कर सकता है। लेकिन इसका साइड इफेक्ट्स पश्चिम बंगाल और तमिलनाडु के विधानसभा चुनावों में भी दिख सकता है, क्योंकि विपक्षी एकजुटता का पुनः संदेश गया है। वहीं, मोदी सरकार महिला आरक्षण बिल को दोबारा लाने के लिए रणनीतिक बदलाव कर सकती है, खासकर 16 अप्रैल 2026 को लोकसभा में हार के बाद। समझा जाता है कि सरकार नई विधेयक रणनीति के तहत दो या तीन नए विधेयक ला सकती हैः पहला लोकसभा सीटें बढ़ाकर (543 से 850 तक) 33% महिला आरक्षण सुनिश्चित करेगा, जिसमें एससी/एसटी के लिए सब-कोटा भी शामिल होगा। लेकिन फिर सवाल उठेगा कि ओबीसी और ईडब्ल्यूएस के लिए क्यों नहीं? दूसरा परिसीमन आयोग स्थापित करेगा, लेकिन इसे राज्यों के अनुमोदन से अलग रखा जा सकता है ताकि दो-तिहाई बहुमत आसान हो। सरकार का मानना है कि विपक्ष से सहमति निर्माण के बाद आवश्यक कदम उठाए जाएंगे, क्योंकि पीएम मोदी सभी दलों को पत्र लिखकर सर्वसम्मति की अपील कर चुके हैं, इसी सिलसिले में कांग्रेस और अन्य विपक्षियों से बातचीत जारी है। महिला कोटा बिल को 2029 चुनावों से पहले लागू करने के लिए 2011 जनगणना पर आधारित संशोधन पर जोर दिया, और नई जनगणना-परीक्षण का इंतजार खत्म किया जाएगा। इसके निमित्त संसदीय प्रक्रिया यह है कि विशेष सत्र बुलाकर संशोधित बिल पेश करना संभव होगा, जहां 18 घंटे लोकसभा और 10 घंटे राज्यसभा चर्चा होगी। वहीं सड़क पर प्रचार के साथ विपक्ष को ओबीसी हितों पर घेराव, जिससे राजनीतिक दबाव बनेगा। यह 2029 से पहले बहुमत जुटाने की कोशिश होगी।

इस प्रकार देखा जाए तो महिला आरक्षण बिल को 2029 से पहले लागू करना संवैधानिक रूप से जटिल है, क्योंकि इसके लिए परिसीमन प्रक्रिया अनिवार्य है जो 2011 जनगणना पर आधारित होनी चाहिए। इसका संभावित विकल्प संशोधित बिल पुनर्प्रस्तावहै जिसके तहत सरकार दोबारा संशोधित विधेयक ला सकती है, जिसमें लोकसभा सीटें बढ़ाकर (543 से 850 तक) 33% महिला कोटा सुनिश्चित हो, लेकिन विपक्ष सहमति के बिना दो-तिहाई बहुमत मुश्किल है। इसलिए विपक्ष से सर्वसम्मति की पहल तेज है। सरकार सभी दलों से बातचीत तेज कर विशेष सत्र बुलाना, परिसीमन को अलग रखकर बिल पास करवाना, हालांकि विपक्ष इसे "परिसीमन साजिश" मान रहा है।

जहाँ तक व्यावहारिक बाधाओं की बात है तो परिसीमन आयोग को पब्लिक हियरिंग और प्रक्रिया में कम से कम 2-3 वर्ष लगते हैं, इसलिए 2029 चुनाव से पहले पूरा होना असंभव है। वहीं बिल गिरने से अब अगली जनगणना (2031) और उसके बाद के परिसीमन तक (2034+) देरी तय, दक्षिणी राज्यों की चिंताएं टल सकती हैं। सरकार सड़क प्रचार पर जोर देगी। वहीं विपक्ष ने लोकसभा में गिरे महिला आरक्षण संविधान संशोधन बिल पर मुख्य रूप से परिसीमन प्रक्रिया, ओबीसी/एससी/एसटी सब-कोटा और राजनीतिक साजिश को लेकर आपत्तियां दर्ज कीं। मुख्य आपत्तियां निम्नलिखित हैं:-

पहला, परिसीमन साजिशः बिल को लोकसभा/विधानसभा सीटें बढ़ाने और 2011 जनगणना पर परिसीमन से जोड़ा गया, जिसे विपक्ष ने उत्तर भारत (विशेषकर भाजपा शासित राज्यों) को लाभ पहुंचाने वाली "सीट रिबनिंग" करार दिया। फलतः दक्षिणी राज्य अपनी सीटें खोने के डर से विरोधी हो गए।

दूसरा, ओबीसी/ईडब्ल्यूएस आरक्षण अनुपस्थितिः 33% महिला कोटा में ओबीसी, ईडब्ल्यूएस के लिए सब-कोटा न होने से सामाजिक न्याय का उल्लंघन ठहराया, और इसे "सवर्ण महिलाओं के लिए" नया मौका बताया। तीसरा, संविधान पर हमलाः राहुल गांधी ने इसे "संविधान बचाओ" का मुद्दा बनाया, और दावा किया कि बिल चुनावी नक्शा बदलकर विपक्ष कमजोर करेगा।

अभियान

अनंत शुभफल का द्वार, परंपरा, ज्योतिष और जीवन दर्शन का संगम

भारतीय सनातन परंपरा में कुछ तिथियां ऐसी मानी गई हैं, जो केवल कैलेंडर का हिस्सा नहीं बल्कि आध्यात्मिक ऊर्जा के विशेष द्वार होती हैं। अक्षय तृतीया उन्हीं दुर्लभ और पवित्र तिथियों में से एक है। 'अक्षय' यानी जिसका क्षय न हो—इस दिन किए गए शुभ कर्मों का फल कभी समाप्त नहीं होता, ऐसा शास्त्रों में वर्णित है। यही कारण है कि यह पर्व न केवल धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह जीवन में सकारात्मकता, समृद्धि और संतुलन लाने का अवसर भी माना जाता है।

वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को मनाया जाने वाला यह पर्व भारतीय संस्कृति में गहराई से रचा-बसा है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, इसी दिन सतयुग और त्रेतायुग का आरंभ हुआ था। इसके अलावा यह भी माना जाता है कि भगवान विष्णु के छठे अवतार परशुराम का जन्म भी इसी दिन हुआ था। इसलिए इसे परशुराम जयंती के रूप में भी मनाया जाता है। इन सभी कारणों से यह तिथि अत्यंत शुभ और दिव्य मानी जाती है। वर्ष 2026 में अक्षय तृतीया की तिथि 19 अप्रैल को सुबह 10:49 बजे से प्रारंभ होकर 20 अप्रैल को सुबह 7:27 बजे तक रहेगी। उदया तिथि के अनुसार यह पर्व 20 अप्रैल को मनाया जाएगा, लेकिन चूंकि तिथि 19 अप्रैल को ही लग रही है, इसलिए उसी दिन पूजा और शुभ कार्यों का विशेष महत्व रहेगा। 19 अप्रैल को सुबह 10:49 बजे से दोपहर 12:20 बजे तक का समय प्रमुख शुभ मुहूर्त माना गया है। इस समय में पूजा, जप, दान और खरीदारी करना विशेष रूप से फलदायी होता है। हालांकि, इस दिन को 'अबूझ मुहूर्त' भी कहा जाता है, इसलिए पूरे दिन में किसी भी समय शुभ कार्य किए जा सकते हैं।

इस दिन भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी की पूजा का विशेष महत्व होता है। मान्यता है कि इस दिन विधिपूर्वक पूजा करने से घर में सुख-समृद्धि, धन-धान्य और शांति का वास होता है। पूजा के लिए प्रातःकाल स्नान करके स्वच्छ वस्त्र धारण करें, preferably पीले या हल्के रंग के कपड़े पहनें। पूजा स्थल को साफ करके भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी की प्रतिमा या चित्र स्थापित करें। धूप-दीप, पुष्प, तुलसी पत्र, चंदन और नैवेद्य अर्पित करें। विष्णु सहस्रनाम का पाठ या लक्ष्मी मंत्र का जाप करना अत्यंत शुभ माना जाता है। अंत में आरती करके प्रसाद वितरित करें।

अक्षय तृतीया का सबसे महत्वपूर्ण पहलू है—दान। शास्त्रों में कहा गया है कि इस दिन किया गया दान अक्षय पुण्य प्रदान करता है। जरूरतमंदों को अन्न, वस्त्र, जल, सत्तू, चावल, दही और दूध का दान करना अत्यंत पुण्यकारी माना गया है। विशेष रूप से गर्मी के मौसम में प्यासे लोगों के लिए पानी की व्यवस्था करना, प्याऊ लगाना या जल से भरे घड़े दान करना इस दिन का प्रमुख कार्य माना जाता है। यह केवल धार्मिक कर्तव्य नहीं, बल्कि मानवता की सेवा भी है।

इस दिन सोना खरीदने की परंपरा भी बहुत पुरानी है। माना जाता है कि सोना खरीदने से धन और समृद्धि में निरंतर वृद्धि होती है और लक्ष्मी जी की कृपा बनी रहती है। हालांकि, हर व्यक्ति के लिए सोना खरीदना संभव नहीं होता, इसलिए ज्योतिष शास्त्र में कुछ अन्य वस्तुओं का उल्लेख किया गया है, जिन्हें खरीदना भी शुभ माना जाता है।

मिट्टी के बर्तन खरीदना मंगल ग्रह को मजबूत करता है और जीवन की बाधाओं को दूर करता है। रूई खरीदना शुक्र ग्रह से संबंधित है, जिससे सुख-सुविधाओं और वैभव में वृद्धि होती है। हल्दी की गांठ खरीदने से गुरु ग्रह मजबूत होता है और जीवन में स्थिरता आती है। पीली सरसों और पीली कौड़ी खरीदना भी धन और सकारात्मक ऊर्जा को आकर्षित करता है। तांबा खरीदना सूर्य ग्रह को बल देता है, जिससे आत्मविश्वास और मान-सम्मान में वृद्धि होती है।

अब बात करें कि इस दिन क्या नहीं करना चाहिए। अक्षय तृतीया के दिन घर में अंधेरा नहीं रखना चाहिए। पूरे घर में दीपक जलाकर सकारात्मक ऊर्जा बनाए रखना आवश्यक है। तामसिक भोजन जैसे मांसाहार और शराब का सेवन इस दिन पूरी तरह वर्जित माना गया है। यह दिन शुद्धता और सात्विकता का प्रतीक है, इसलिए केवल सात्विक भोजन ही ग्रहण करना चाहिए।

इसके अलावा क्रोध, झगड़ा और नकारात्मक सोच से बचना चाहिए। इस दिन किए गए कर्मों का प्रभाव कई गुना बढ़ जाता है, इसलिए सकारात्मक व्यवहार और विचार रखना जरूरी है। उधार का लेन-देन करना भी इस दिन अशुभ माना जाता है। ऐसा माना जाता है कि इस दिन लिया गया कर्ज लंबे समय तक बना रहता है और आर्थिक समस्याएं उत्पन्न कर सकता है। चमड़े से बनी वस्तुएं खरीदना भी इस दिन वर्जित माना गया है।

अक्षय तृतीया का महत्व केवल धार्मिक अनुष्ठानों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह जीवन के गहरे दर्शन को भी प्रस्तुत करता है। यह हमें सिखाता है कि सच्ची समृद्धि केवल धन से नहीं, बल्कि अच्छे कर्मों, दया, करुणा और संतोष से आती है। इस दिन किया गया छोटा सा दान भी किसी के जीवन में बड़ा बदलाव ला सकता है।

आज के आधुनिक जीवन में, जहां लोग भागदौड़ और तनाव से घिरे रहते हैं, वहां यह पर्व हमें ठहरकर सोचने का अवसर देता है। यह हमें अपने भीतर झांकने, अपने कर्मों का मूल्यांकन करने और एक बेहतर इंसान बनने की प्रेरणा देता है।

अक्षय तृतीया यह भी सिखाती है कि जीवन में स्थायी खुशी पाने के लिए हमें केवल भौतिक चीजों पर निर्भर नहीं रहना चाहिए। आध्यात्मिकता, संतुलन और संतोष ही वास्तविक सुख के स्रोत हैं। यह पर्व हमें यह समझाता है कि जब हम दूसरों की मदद करते हैं, तो वास्तव में हम अपने जीवन को भी समृद्ध बनाते हैं।

अंततः, अक्षय तृतीया केवल एक त्योहार नहीं, बल्कि एक जीवन दर्शन है। यह हमें सिखाता है कि अच्छे कर्मों का कोई अंत नहीं होता और सच्ची समृद्धि वही है, जो दूसरों के साथ बांटी जाए। यदि इस दिन श्रद्धा, भक्ति और सच्चे मन से पूजा, दान और सकारात्मक कार्य किए जाएं, तो जीवन में न केवल भौतिक सुख, बल्कि मानसिक शांति और आत्मिक संतोष भी प्राप्त होता है। यही इस पावन पर्व का वास्तविक संदेश है—अच्छे कर्म करें, सकारात्मक रहें और अपने जीवन को अक्षय बनाएं।

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH
Rage.Office: TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005 Gujarat,India. Phone : (O) 9016333307(M)9328333307,9825333307
Email : garvigujarat2007@gmail.com*garvigujarat2007@yahoo.com*Website : www.garvigujarat.co.in

सूरत में अधूरी परियोजनाओं में ब्रोकर-बिल्डर घोटाला, धोखाधड़ी और निवेशकों को धमकियां

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। शहर और आसपास के इलाकों में बन रही और पूरी हो चुकी परियोजनाओं में, धर्म-वीरू की प्रॉपर्टी ब्रोकर जोड़ी लोगों को ठीक वैसे ही अपनापन महसूस कराती है, जैसे बुलेट ट्रेन में कराया करती थी। ये प्रॉपर्टी ब्रोकर जोड़ी लोगों को वैसा ही एहसास दिलाती है। सरौली से गोदादरा तक के बाज़ारों की परियोजनाएं, रिंग रोड पर स्थित बाज़ार, बिल्डरों द्वारा बनाई गई परियोजनाएं, लंबे समय से अधूरी पड़ी हैं और कई बाज़ार लंबे समय से जर्जर हालत में हैं। इनके पूरा होने की कोई उम्मीद भी नहीं है। ऐसी परियोजनाओं में, ज़रूरतमंद लोगों ने बुकिंग के समय 30%-40% भुगतान करके ब्रोकरों के माध्यम से दुकानें या गोदाम बुक करवाए थे, लेकिन बिल्डरों और ब्रोकरों के माध्यम से निवेश करने वालों को लंबे समय से कोई लाभ नहीं मिला है। वहीं, जिन परियोजनाओं को पूरा हुए 10-12 साल से अधिक समय हो गया है, उनमें लोगों को लंबे समय से कब्ज़ा नहीं मिला है। कई बाज़ार अधूरे निर्माण के कारण जर्जर हालत में हैं।

ऐसे खस्ताहाल बाजारों में, जिन लोगों ने अपनी 30%-40% रकम बेवजह निवेश कर दी है, वे अक्सर बिल्डरों से अपना पैसा वसूलने जाते हैं। इसी बीच, धर्म-वीरू जैसे दो प्रॉपर्टी ब्रोकर अपनी बुलेट कार में ऐसे इलाकों में जाते हैं और पता लगाते हैं कि किसने पैसा निवेश किया है और कब से फंसा हुआ है। वे फंसे हुए लोगों से मिलते हैं, हमदर्दी जताते हैं, उनका विश्वास जीतते हैं और उनसे पूरी जानकारी निकलवा लेते हैं। वे पूछते हैं, "आपके पास क्या सबूत है? अगर डायरी, सौदे के दस्तावेज जैसे सबूत हैं, तो हम तथाकथित प्रॉपर्टी ब्रोकरों के संगठन के सदस्य हैं। इसलिए हम बिल्डरों से आपका फंसा हुआ पैसा निकलवा देंगे।" वे इस तरह से आपका विश्वास जीतते हैं। वे

एक-दूसरे के मोबाइल नंबर और दूसरे कारोबारियों के पते हासिल कर लेते हैं और उनसे संपर्क में रहते हैं। बिल्डरों से मिलने की बात करके हम अपना 10%-15% पैसा वसूल लेंगे और किसी भी बिल्डर से आपका पैसा निकलवा लेंगे। इसलिए, निवेशक और जरूरतमंद लोग इस जोड़े पर भरोसा कर लेते हैं और उन्हें सौदे के दस्तावेजों और डायरियों की फोटोकॉपी दे देते हैं। और वे समुदाय और जाति से घनिष्ठ संबंध बनाकर जरूरतमंदों से पैसे वसूलते हैं। कई बार जरूरतमंद लोग और निवेशक मूल सौदे के दस्तावेज और डायरी भी दे देते हैं। इसके बाद, बिल्डरों से मिलने के बाद, हम खुद को दलाल संघ के सदस्य के रूप में उनसे परिचित कराते हैं और निवेशकों के पैसे के बारे में बात करते हैं और उन्हें बताते हैं कि अगर वे हमें वह पैसा नहीं देते जो उन्हें नहीं मिला है, तो हम बड़ी संख्या में इकट्ठा होकर विरोध प्रदर्शन करेंगे और उनकी परियोजनाओं के खिलाफ धरना देंगे।

इससे डरकर बिल्डर अपनी इज्जत बचाने के लिए संपत्ति दलालों की जोड़ी से समय मांगता है। और बिल्डरों के साथ जो समझौता हुआ था कि हम निवेशकों और जरूरतमंदों को तीन से छह महीने के भीतर भुगतान कर देंगे, उसे धर्म-वीर की संपत्ति दलाल जोड़ी सादे कागज पर बिल्डरों को भुगतान के संबंध में लिख देती है।

इस प्रॉपर्टी ब्रोकर जोड़ी की परेशानियां बढ़ने पर एक कुख्यात प्रोजेक्ट के बिल्डर ने दोनों के खिलाफ पुलिस स्टेशन में एफआईआर दर्ज कराई, जिसके चलते उन्हें जेल जाना पड़ा। बाद में अदालत ने दोनों को जमानत दे दी। अन्य ब्रोकरों की आपस में जान-पहचान और इस जोड़ी की एक नामी ब्रोकर से जान-पहचान होने के कारण, इस जोड़ी ने कुछ प्रोजेक्टों में छोटा-बड़ा कारोबार किया था। ब्रोकर एक-दूसरे के प्रोजेक्टों में 0.5% से 1% तक ब्रोकरेज लेते हैं। लेकिन चूंकि यह जोड़ी एक नामी ब्रोकर है, इसलिए वे पैसे नहीं वसूलते, फिर अचानक उनकी वसूली शुरू हो जाती है। फिर, 0.5% से 1% के बजाय, दूसरे पक्ष से, चाहे वह कोई प्रतिष्ठित ब्रोकर हो, निवेशक हो या जरूरतमंद व्यक्ति, 2% से 3% तक शुल्क लिया जाता है। और जब वे कहते हैं कि यह प्रतिशत ब्रोकरेज देना ही होगा, तो वे धौंस जमाने और डराने-धमकाने का सहारा लेते हैं और धर्म-वीरू की भूमिका निभाते हुए जोर-जोर से चिल्लाते और गाली-गलौज करते हैं। फिर वे दूसरे पक्ष के प्रतिष्ठित ब्रोकर को किसी अन्य प्रोजेक्ट के स्थान पर बुलाकर वीरू की भूमिका निभाते हैं और उसके साथ मौज-मस्ती करते हैं। धर्मवीर की बेटी, जो इस धर्म-वीरू जोड़ी की बेटी है, को हाल ही में बार काउंसिल से वकील का प्रमाण पत्र मिला है। इसी वजह से, ये जोड़ी, भले ही उनकी बेटी वकील है, चिल्लाती है और दूसरे पक्ष को गलत मामले में फंसाती है, वरना कहती है कि मैं आत्महत्या कर लूंगी, मुझे किडनी और लीवर की गंभीर बीमारी है। अगर तुमने मुझे पैसे नहीं दिए तो तुम नाराज और परेशान हो जाओगे। इसलिए मुझे पैसे दे दो।

इसलिए, प्रतिष्ठित दलाल स्तब्ध रह गया और धर्म-वीरू द्वारा मनमाने ढंग से तय किए गए प्रतिशत को देने के लिए समय मांगा। प्रतिष्ठित दलाल ने दंपति को अपने मित्र के कार्यालय में बुलाया और एक सादे कागज पर उनकी मनमानी रकम लिख दी। प्रतिष्ठित दलाल ने 1 लाख 91 हजार रुपये की छोटी-बड़ी संपत्तियों की दलाली का वह लिखित दस्तावेज लिया और अपने मित्र के माध्यम से दंपति को उनके कार्यालय में भुगतान कर दिया। लेकिन दंपति को यह नहीं पता कि यह समझौता कहां हुआ और पैसा कहां प्राप्त हुआ और कहां दिया गया। उस मित्र के कार्यालय में लगे सीसीटीवी कैमरे की फुटेज में, प्रतिष्ठित दलाल के मित्र ने दंपति की रसीद और भुगतान के सबूत के तौर पर फुटेज रखी है। दंपति की मानसिकता को समझते हुए, प्रतिष्ठित दलाल के मित्र ने सबूत को एहतियात के तौर पर सुरक्षित रख लिया है।

जिन परियोजनाओं का कब्ज़ा 10 से 12 वर्षों से अधिक समय से नहीं मिला है, उनके बिल्डर इस तरह के गठजोड़ को बढ़ावा देते हैं। क्योंकि जरूरतमंद और निवेशक, जिन्होंने अन्य दलालों के माध्यम से 30% से 40% निवेश किया है, उन्हें दुकानों या गोदामों का कब्ज़ा नहीं मिला है। लंबे समय बाद, निवेशक उन्हीं दलालों से संपर्क करते हैं जिन्होंने उनके माध्यम से निवेश किया था। और वे दलाल उन्हें बिल्डरों से मिलवाते हैं। लेकिन चूंकि बिल्डर और दलाल एक ही माला के मोती हैं, इसलिए बिल्डर खुलेआम जरूरतमंद और निवेशकों से कहते हैं कि उन्हें उनके द्वारा भुगतान की गई राशि का 30% से 40% वापस मिलेगा या वे अन्य परियोजनाओं में दुकानें, गोदाम, फ्लैट दिलाने की बात करते हैं, चाहे वे उनके दोस्तों की हों या उनकी अपनी परियोजनाएं हों। जब दरें बाजार दर से बहुत अधिक होती हैं और यह एक व्यावसायिक स्थान होता है, तो निवेशक और जरूरतमंद ऐसा करने के लिए मजबूर हो जाते हैं। और यदि भुगतान की गई राशि उपलब्ध नहीं होती है, तो पैसा वापस कर दिया जाता है और भुगतान की गई राशि का 30% से 40% वापस दे दिया जाता है। और इसके लिए कोई समय सीमा नहीं है। जैसे ही हमारे पास सुविधाएं उपलब्ध होंगी, हम आपको दे देंगे। ऐसे बिल्डर सरासर घमंड और अहंकार से बातें करते हैं। क्योंकि लेन-देन के नोट या डायरी में लिखे दस्तावेज़ों पर कोई कार्रवाई नहीं की जाएगी। चूंकि बिल्डर यह बात अच्छी तरह जानते हैं और स्थानीय पुलिस एवं उच्च पदस्थ पुलिस अधिकारियों से उनके अच्छे संबंध हैं, इसलिए वे बेखौफ रहते हैं। निवेशकों और जरूरतमंदों को इन्हीं दलालों के माध्यम से बताया जाता है कि जो हम देंगे, वही लेना पड़ेगा। बार-बार खुलेआम धमकी दी जाती है कि हमारे प्रोजेक्ट में न आएं और जब वे पैसे लेने जाते हैं, तो बिल्डर जुगल जोड़ी को कॉर्डवर्ड या मोबाइल से कॉल करके निवेशकों और जरूरतमंदों को धमकाते हैं और कहते हैं कि पैसे ले लो। जुगल जोड़ी खुलेआम कहती है कि बिल्डर जो भी दें, वही ले लें। ऐसे दीर्घकालीन प्रोजेक्ट पूरे नहीं होते क्योंकि वे योजना के विरुद्ध बनाए जाते हैं, अतिरिक्त दुकानें, शोरूम, गोदाम आदि बन जाते हैं और बिल्डर रिश्वतखोरी और विपुल गणेशवाला जैसे भ्रष्ट अधिकारियों के आशीर्वाद से इनका पूरा फायदा उठाते हैं। लेकिन बिल्डरों को इस बात का एहसास नहीं है कि डायरी और डील लेटर में हस्ताक्षर करके ली गई रकम को एफएसएल और हस्ताक्षर विशेषज्ञ द्वारा प्रमाणित किया जा सकता है और उनके खिलाफ अपराध दर्ज किया जा सकता है। और यह भी

नहीं भूलना चाहिए कि बिल्डरों को जेल भी जाना पड़ सकता है। क्योंकि कानून से कोई बच नहीं सकता।

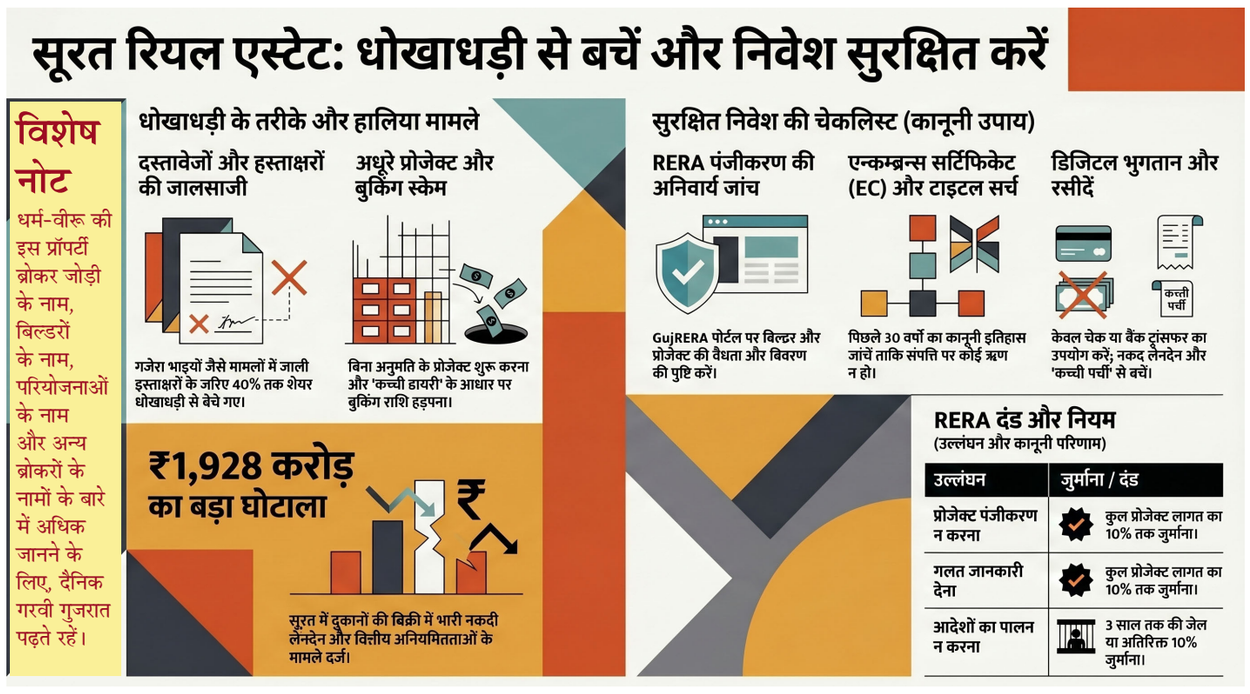

भावनगर टर्मिनस - हावड़ा जंक्शन के बीच 20 अप्रैल और 27 अप्रैल को चलेगी "समर स्पेशल ट्रेन"

यात्रियों की बढ़ती भीड़ को ध्यान में रखते हुए पश्चिम रेलवे द्वारा ग्रीष्मकालीन अवकाश अवधि में अतिरिक्त यात्री सुविधा प्रदान करने के उद्देश्य से ट्रेन ऑन डिमांड (TOD) के अंतर्गत विशेष ट्रेन चलाने का निर्णय लिया गया है। यह ट्रेन विशेष किराया (Special Fare) पर संचालित की जाएगी।

यात्रियों की सुविधा हेतु पश्चिम रेलवे द्वारा भावनगर टर्मिनस और हावड़ा जंक्शन के बीच "समर स्पेशल ट्रेन" संचालित की जाएगी। यह सेवा भावनगर टर्मिनस से 20 अप्रैल 2026 और 27 अप्रैल 2026 को संचालित की जाएगी। भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी के अनुसार ट्रेनों का विस्तृत विवरण निम्नानुसार है—

ट्रेन नंबर 09531 भावनगर टर्मिनस – हावड़ा जंक्शन समर स्पेशल 20 अप्रैल, 2026 और 27 अप्रैल, 2026 को संचालित होगी। यह ट्रेन भावनगर टर्मिनस से सोमवार को शाम 17.45 बजे प्रस्थान कर बुधवार को रात्रि 21.40 बजे हावड़ा जंक्शन पहुंचेगी।

इसी प्रकार वापसी में ट्रेन संख्या 09532 हावड़ा जंक्शन– भावनगर टर्मिनस समर स्पेशल 23 अप्रैल, 2026 और 30 अप्रैल, 2026 को संचालित होगी। यह ट्रेन हावड़ा जंक्शन से गुरूवार को सुबह 10.50 बजे प्रस्थान कर शनिवार को सुबह 06.30 बजे भावनगर टर्मिनस पहुंचेगी।

यह ट्रेन दोनों दिशाओं में सोनगढ़, धोला, बोटाद, सुरेन्द्रनगर गेट, विरमगाम, महेसाना, पालनपुर जं., आबूरोड, अजमेर जंक्शन, जयपुर जंक्शन, बांदीकुई जंक्शन, भरतपुर जंक्शन, अछनेरा जंक्शन, ईदगाह जंक्शन, टुंडला जंक्शन, गोविंदपुरी, प्रयागराज जंक्शन, पंडित दीन दयाल उपाध्याय जंक्शन, सासाराम, गया जंक्शन, कोडरमा, धनबाद जंक्शन, आसनसोल जंक्शन, दुर्गापुर, बर्धमान एवं बैण्डेल जं. स्टेशनों पर ठहरेगी। ट्रेन में स्लीपर तथा जनरल श्रेणी के कोच उपलब्ध रहेंगे।

ट्रेन नंबर 09531 के लिए टिकटों की बुकिंग यात्री आरक्षण केंद्रों एवं आईआरसीटीसी की आधिकारिक वेबसाइट पर जल्द हीं प्रारंभ होगी। यात्रीगण ट्रेन के समय, ठहराव एवं संरचना से संबंधित विस्तृत जानकारी के लिए भारतीय रेलवे की आधिकारिक वेबसाइट www.enquiry.indianrail.gov.in पर अवलोकन कर सकते हैं।

मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा ने यात्रियों से अपील की है कि वे इस विशेष ट्रेन सेवा का अधिकतम लाभ उठाकर अपनी यात्रा को सुगम एवं सुविधाजनक बनाएं।

20 अप्रैल को कुछ ट्रेनें साबरमती स्टेशन पर नहीं रुकेगी

पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मण्डल के साबरमती स्टेशन पर चल रहे पुनर्विकास कार्य के संबंध में इंजीनियरिंग कार्य हेतु 20 अप्रैल 2026 को ब्लॉक लिया गया है। जिसके कारण कुछ ट्रेनों का ठहराव साबरमती (जेल साइड) स्टेशन पर स्थगित किया गया है। जिसका विवरण निम्नानुसार हैः-

20 अप्रैल को साबरमती स्टेशन (जेल साइड) पर ठहराव नहीं करने वाली ट्रेनें:

- ट्रेन संख्या 19016 पोरबंदर-दादर सौराष्ट्र एक्सप्रेस
- ट्रेन संख्या 22926 ओखा-अहमदाबाद वंदे भारत एक्सप्रेस
- ट्रेन संख्या 22960 जामनगर-वडोदरा इंटरसिटी एक्सप्रेस
- ट्रेन संख्या 69186 विरमगाम-अहमदाबाद मेमू

यात्रियों से अनुरोध है कि उपरोक्त बदलाव को ध्यान में रखते हुए यात्रा करें। ट्रेन संबंधी विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया https://enquiry.indianrail.gov.in वेबसाइट पर जाकर जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

अहमदाबाद मंडल की ऐतिहासिक उपलब्धि : जम्मू–कश्मीर के लिए पहली बार भेजी गई दूध उत्पादों की कार्गो रेक

पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल ने माल परिवहन के क्षेत्र में एक नई ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल करते हुए जम्मू-कश्मीर के लिए दुग्ध उत्पादों की अपनी पहली कार्गो रेक सफलतापूर्वक रवाना की है।

यह विशेष खेप गुजरात को-ऑपरेटिव मिल्क मार्केटिंग फेडरेशन लिमिटेड (अमूल) के लिए लिंच (LCH) स्टेशन से लोड की गई है। इस रेक में कुल 20 BCN वैगन शामिल हैं, जिन्हें दो भागों में विभाजित किया गया है—10 वैगन बारी ब्राह्मण (BBMN) तथा शेष 10 वैगन उत्तर रेलवे के जम्मू-तवी मंडल के अनंतनाग (ANT) स्टेशन के लिए भेजे गए हैं।

इस परिवहन से रेलवे को 24.62 लाख का माल भाड़ा राजस्व प्राप्त हुआ है। यह पहल न केवल डेयरी उत्पादों की निर्बाध आपूर्ति श्रृंखला सुनिश्चित करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है, बल्कि देश के दूरस्थ क्षेत्रों तक आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति में भारतीय रेलवे की प्रतिबद्धता को भी दर्शाती है।

उल्लेखनीय है कि इससे पूर्व अक्टूबर 2025 में कश्मीर घाटी में माल परिवहन के क्षेत्र में एक और ऐतिहासिक उपलब्धि दर्ज की गई थी, जब 1,350 टन औद्योगिक नमक की पहली रेल खेप गुजरात के अहमदाबाद मंडल के खारागोड़ा (KOD) स्टेशन से अनंतनाग (ANT) स्टेशन तक सफलतापूर्वक पहुंचाई गई थी।

नमक और दुग्ध उत्पादों की इन सफल खेपों के माध्यम से अहमदाबाद मंडल ने जम्मू-कश्मीर के साथ अपने व्यापारिक एवं आर्थिक संबंधों को और अधिक सुदृढ़ किया है। यह पहल गुजरात के डेयरी एवं औद्योगिक क्षेत्रों को कश्मीर घाटी के बाजारों से सीधे जोड़ने में अत्यंत सहायक सिद्ध होगी।

नवनिर्मित स्टाफ क्वार्टर एवं एकीकृत नियंत्रण कार्यालय का उद्घाटन

पश्चिम रेलवे के भावनगर मंडल में दिनांक 18 अप्रैल 2026 (शनिवार) को मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा के करकमलों द्वारा नवनिर्मित स्टाफ क्वार्टर (टाइप-II) तथा डीआरएम कार्यालय, भावनगर परा में स्थापित नवीन एकीकृत नियंत्रण कार्यालय (इंटीग्रेटेड कंट्रोल ऑफिस) का विधिवत उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर अपर मंडल रेल प्रबंधक श्री ऋत्विक शर्मा एवं मंडल इंजीनियर (समन्वय) श्री डी. एस. यादव की गरिमामयी उपस्थिति रही।

स्टाफ क्वार्टर का उद्घाटन

मंडल में रेल कर्मचारियों के बेहतर आवासीय सुविधा सुनिश्चित करने की दिशा में नवनिर्मित टाइप-II स्टाफ क्वार्टर का उद्घाटन एक महत्वपूर्ण कदम है। यह आवासीय परियोजना कर्मचारियों के जीवन स्तर में सुधार एवं कार्य-जीवन संतुलन को सुदृढ़ करने में सहायक सिद्ध होगी।

एकीकृत नियंत्रण कार्यालय (Integrated Control Office) डीआरएम कार्यालय, भावनगर परा में स्थापित आधुनिक एकीकृत नियंत्रण कार्यालय का उद्घाटन भी इसी अवसर पर किया गया। यह सुविधा मंडल में समन्वय, सुरक्षा, संरक्षा तथा परिचालन दक्षता को सुदृढ़ करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है।

नव विकसित नियंत्रण कार्यालय को आधुनिक, एर्गोनोमिक एवं तकनीक-अनुकूल कार्यस्थल के रूप में विकसित किया गया है, जिसमें मॉड्यूलर फर्नीचर, रिवॉल्विंग चेयर तथा एयर कंडीशनिंग की समुचित व्यवस्था की गई है, जिससे 24×7 कार्यरत कर्मचारियों के लिए आरामदायक एवं कुशल कार्य वातावरण सुनिश्चित होगा।

वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी ने बताया कि इस एकीकृत व्यवस्था के अंतर्गत मंडल के विभिन्न प्रमुख नियंत्रणों को एक ही छत के नीचे लाकर एक समन्वित कमांड एवं नियंत्रण केंद्र के रूप में विकसित किया गया है, जिसमें निम्नलिखित नियंत्रण शामिल हैं:

ट्रेन ऑपरेशन कंट्रोल: यात्री एवं मालगाड़ियों की रियल टाइम मॉनिटरिंग एवं संचालन

आरपीएफ (सुरक्षा) कंट्रोल: यात्रियों एवं रेलवे संपत्ति की सुरक्षा हेतु 24×7 निगरानी

पावर एवं कैरिज कंट्रोल: लोकोमोटिव प्रदर्शन एवं कोच रखरखाव की निगरानी

इंजीनियरिंग कंट्रोल: पटरियों के रखरखाव एवं अवसंरचना कार्यों का समन्वय

इलेक्ट्रिकल कंट्रोल: स्टेशन लाइटिंग एवं अन्य विद्युत आपूर्ति का प्रबंधन

सिग्नल एवं दूरसंचार कंट्रोल: सिग्नलिंग एवं संचार प्रणाली की विश्वसनीयता सुनिश्चित करना

कमर्शियल कंट्रोल: यात्री सुविधाओं, टिकट जांच एवं राजस्व की निगरानी

डिजास्टर मैनेजमेंट कक्ष: आपातकालीन परिस्थितियों में त्वरित समन्वय हेतु समर्पित सुविधा

यह अत्याधुनिक एकीकृत नियंत्रण प्रणाली त्वरित निर्णय लेने, बेहतर समन्वय स्थापित करने, प्रभावी आपदा प्रबंधन तथा ट्रेन संचालन की कुशल निगरानी सुनिश्चित करेगी।

भावनगर मंडल का रेल वॉर रूम (Rail War Room) मंडल कार्यालय में स्थापित 24x7 सक्रिय अत्याधुनिक नियंत्रण केंद्र है, जो ट्रेनों की आवाजाही, यात्री शिकायतों और सुरक्षा की रियल-टाइम निगरानी करता है। इसका उद्देश्य यात्रियों की परेशानियों (जैसे- गंदगी, खाना, सुरक्षा) को तुरंत दूर करना और परिचालन संबंधी मुद्दों का तेजी से निपटारा करना। यह केंद्र 24x7 काम करता है, जिसमें कर्मचारी रोटेशन में कंप्यूटर टर्मिनलों पर बैठकर ट्रेनों की लाइव मॉनिटरिंग करते हैं। रेल वॉर रूम को सीधे सोशल मीडिया, रेल मदद और 139 हेल्पलाइन से जोड़ा गया है, ताकि शिकायतों को त्वरित प्रतिक्रिया मिले। ट्रेन दुर्घटना या किसी भी अप्रिय घटना की स्थिति में, यह कक्ष वरिष्ठ अधिकारियों को त्वरित निर्णय लेने में मदद करता है। यह प्रणाली भीड़भाड़ वाले त्योहारों के समय विशेष रूप से प्रभावी होती है, जहां यह रीयल-टाइम में भीड़ नियंत्रण (Crowd Control) का काम करती है।

मंडल की प्रतिबद्धता

यह पहल भावनगर मंडल की डिजिटल परिवर्तन, सुरक्षा, संरक्षा, विश्वसनीयता एवं यात्री सुविधाओं के सतत उन्नयन के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाती है। साथ ही, यह आधुनिक, स्मार्ट एवं यात्री-केंद्रित रेलवे प्रणाली के निर्माण की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

पश्चिम रेलवे द्वारा साबरमती-दुर्गापुर के बीच समर स्पेशल ट्रेन का संचालन

पश्चिम रेलवे द्वारा यात्रियों की मांग एवं भीड़ को ध्यान में रखते हुए साबरमती–दुर्गापुर–साबरमती समर स्पेशल ट्रेन चलाने का निर्णय लिया गया है। इसका विवरण निम्नानुसार है:

ट्रेन संख्या 09421/09422 साबरमती–दुर्गापुर–साबरमती स्पेशल (विशेष किराया पर)

ट्रेन संख्या 09421 (साबरमती–दुर्गापुर स्पेशल) दिनांक 21 एवं 26 अप्रैल, 2026 को साबरमती से 10:35 बजे प्रस्थान करेगी तथा तीसरे दिन 01:00 बजे दुर्गापुर पहुंचेगी।

ट्रेन संख्या 09422 (दुर्गापुर–साबरमती स्पेशल) दिनांक 23 एवं 28 अप्रैल, 2026 को 04:00 बजे दुर्गापुर से प्रस्थान करेगी तथा दूसरे दिन 19:30 बजे साबरमती पहुंचेगी।

मार्ग में दोनों दिशाओं में यह ट्रेन महेसाणा, पालनपुर, आबू रोड, अजमेर, जयपुर, बांदीकुई, भरतपुर, ईदगाह आगरा, टूंडला, गोविंदपुरी, सूबेदारगंज, पंडित दीनदयाल उपाध्याय, सासाराम, गया, कोडरमा, धनबाद, आसनसोल एवं अण्डाल स्टेशनों पर रुकेगी।

ट्रेन सं. 09421 (साबरमती–दुर्गापुर स्पेशल) के लिए आरक्षण की बुकिंग 20 अप्रैल, 2026 से सभी PRS काउंटर्स एवं IRCTC वेबसाईट पर उपलब्ध होगी।

इस ट्रेन में 3-टियर एसी एवं 3-टियर एसी एकोनोमी श्रेणी के कोच रहेंगे।

निस्वार्थ सेवा से बना एक रिश्ता: एक बंदर के विलाप और मानवता को दर्शाने वाली एक हृदयस्पर्शी घटना

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। हमारे यहाँ एक कहावत है, "अच्छे कर्म करो और उन्हें समुद्र में बहा दो।" इसका अर्थ यह है कि यदि आप किसी जानवर, पक्षी या गरीब इंसान की मदद बिना किसी अहंकार या प्रतिफल की अपेक्षा के करते हैं, तो वही सच्ची परोपकारिता है। इसे निस्वार्थ सेवा कहते हैं, और उस निस्वार्थ सेवा के फल स्वरूप, पत्थर दिल इंसान भी विनम्र हो जाता है और आपसे घनिष्ठ संबंध बनाने के लिए विवश हो जाता है। चाहे वह व्यक्ति कितना भी खूंखार जंगली जानवर क्यों न हो, क्यों नहीं? यहां एक ऐसी ही कहानी है, जिसमें एक महिला, जो हर दिन एक बंदर को खाना खिलाती थी, की मृत्यु हो गई और बंदर के विलाप ने भालाभला की आंखों में आंसू ला दिए। कर्नाटक के रामनगर जिले के रायरा डोड्डी गांव में ऐसी ही एक घटना घटी, जिसने गांव वालों को भावुक कर दिया। 85 वर्षीय पार्वतीम्मा का वृद्धावस्था के कारण एक छोटी बीमारी से निधन हो गया। पार्वतीम्मा ने अपने जीवन का एक बड़ा हिस्सा बंदरों

को समर्पित कर दिया था। वह हर दिन अपने घर आने वाले बंदरों को पुकारती, खाना खिलाती और सहलाती थीं। उनके आसपास के लोग बंदरों को मुसीबत मानते थे। लेकिन पार्वतीम्मा के लिए, उनके आंगन में आने वाले बंदर उनके अपने ही थे। जब पार्वतीम्मा के पार्थिव शरीर को अंतिम संस्कार के लिए प्रांगण में रखा गया, तो भीड़ को चीरते हुए एक बंदर वहाँ आया। उसने पार्थिव शरीर के चेहरे पर पड़ा कपड़ा हटाया और कुछ क्षण चुपचाप वहीं बैठा रहा। कुछ देर बाद वह पार्थिव शरीर के पास गया और उसके चेहरे को सहलाया। फिर उसने पार्वतीम्मा की छाती को गले लगाया और रोने लगा। बंदर ने कितनी देर तक अपनी आँखें बंद रखीं और पार्वतीम्मा की छाती, मुँह और माथे को ऐसे चूमता रहा जैसे उन्हें चूम रहा हो। ऐसा लगता है कि वह अपने अंतिम सहारे के बिछड़ने का शोक मना रहा था। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि यह दृश्य देखकर वहाँ मौजूद सभी लोग स्तब्ध रह गए। जब बंदर के इस भावुक दृश्य का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ, तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि समझदार लोगों की आँखें भी नम हो गईं। यहां यह बताना जरूरी है कि सूरत के एक अस्पताल की नर्स ने एक वीडियो साझा किया है जिसमें एक बुजुर्ग मरीज, जिनका बिस्तर खिड़की के पास था, की छाती पर रोजाना एक कबूतर आकर बैठता था। 15 मिनट बाद, मरीज अपना हाथ घुमाता और कबूतर उड़ जाता था। ऐसा इसलिए होता था क्योंकि मरीज रोजाना कबूतरों को दाना खिलाता था।

पश्चिम रेलवे — रतलाम मंडल

इंजीनियरिंग विभाग : ई–टेंडरिंग सूचना

संख्या : W/623/5/1/NIT, दिनांक : 16.04.2026, मंडल रेल प्रबंधक/मंडल कार्यालय (कार्यलेखा शाखा) पश्चिम रेलवे, रतलाम भारत के राष्ट्रपति की ओर से निम्नलिखित कार्य के लिए ''खुली निविदा'' ई–निविदा के माध्यम से वेबसाइट **www.ireps.gov.in** पर आमंत्रित करते हैं। विवरण इस प्रकार है।

क्र. संख्या : 1, **ई–टेंडरिंग संख्या** : RTM-2025-26-149R, **कार्य का नाम** : Execution of various work in RTM division : 1.Ratlam Division - Upgradation of station, circulating area, water supply & approach roads at Ujjain, Laxmibai nagar, Naikheri (Simhastha 2028). 2. Ratlam Division - Augmentation of Water Supply arrangements at various stations (12 stations) (Simhastha 2028). 3. Ujjain - Improvement to Circulating area and Drainage towards PF01 and PF08 (Simhastha 2028). 4.Chintaman Ganesh - Provision of Cover shed on PF 01 and PF 02 (Simhastha 2028), **अनुमानित लागत** : ₹ 48,09,02,667.36, **बयाना राशि** : ₹ 96,18,100.00, **निविदा खुलने की तिथि** : 08.05.2026. विस्तृत निविदा सूचना अर्हता शर्तें एवं अन्य शर्तें वेबसाइट **www.ireps.gov.in** पर उपलब्ध है।

ADM/5/1/007

Follow us on: twitter.com/WesternRly

पश्चिम रेलवे द्वारा साबरमती ⇌ दुर्गापुर के बीच AC स्पेशल ट्रेन चलाई जाएगी

ट्रेन क्र.	प्रस्थान स्टेशन और गंतव्य	सेवा के दिन	प्रस्थान	आगमन
09421	साबरमती – दुर्गापुर	21.04.2026 और 26.04.2026	10:35 बजे (मंगलवार और रविवार)	01:00 बजे (गुरुवार और मंगलवार)
09422	दुर्गापुर – साबरमती	23.04.2026 और 28.04.2026	04:00 बजे (गुरुवार और मंगलवार)	19:30 बजे (शुक्रवार और बुधवार)

होल्टः महेसाणा, पालनपुर, आबू रोड, अजमेर, जयपुर, बांदीकुई, भरतपुर, ईदगाह आगरा,टूंडला, गोविंदपुरी, सूबेदारगंज, पं. दीन दयाल उपाध्याय, सासाराम, गया, कोडरमा, धनबाद, आसनसोल और अंडाल स्टेशन दोनों दिशाओं में।

संरचना: AC 3-टियर, AC 3-टियर (इकोनॉमी) कोच।

समय, ठहराव और संरचना के बारे में विस्तृत जानकारी के लिए, यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जा सकते हैं।

ट्रेन संख्या 09421 के लिए बुकिंग दि. 20.04.2026 से सभी PRS काउंटरों और IRCTC की वेबसाइट पर शुरू होगी। यह ट्रेन स्पेशल ट्रेन के रूप में स्पेशल किराए पर चलेगी।

पश्चिम रेलवे
wr.indianrailways.gov.in
हमें लाइक और फॉलो करें:
facebook.com/WesternRly
X.com/WesternRly
Instagram.com/WesternRly
https://www.youtube.com/@WesternRly
https://bit.ly/WesternRailwayOfficial

कृपया सभी आरक्षित टिकटों के लिए मूल पहचान पत्र साथ रखें।

मजबूरी की रेलगाड़ी: सूरत स्टेशन पर उमड़ी भीड़, एलपीजी संकट और पलायन की पीड़ा की दास्तान

उधना रेलवे स्टेशन की वह सुबह किसी आम दिन जैसी नहीं थी। प्लेटफॉर्म पर कदम रखने की जगह नहीं थी, पटरियों के किनारे तक लोग खड़े थे और हर चेहरे पर एक ही बेचैनी साफ पढ़ी जा सकती थी—किसी तरह घर पहुंच जाना है। हाथों में बैग, सिर पर गठरी, कंधों पर बच्चों का बोझ और आंखों में अनिश्चित भविष्य का डर यह दृश्य केवल भीड़ का नहीं, बल्कि मजबूरी की उस लंबी यात्रा का था, जिसमें हजारों लोग अपने सपनों को समेटकर वापस लौटने को मजबूर हो गए हैं।

सूरत, जिसे कभी रोज़गार का शहर कहा जाता था, जहां दूर-दराज़ के राज्यों से लोग बेहतर जिंदगी की तलाश में आते थे, आज वही शहर अपने मजदूरों को वापस भेजने की कहानी लिख रहा है। इसकी वजह सिर्फ एक नहीं है। मिडिल ईस्ट में बढ़ते तनाव, खासकर ईरान और इजरायल के बीच टकराव और उसमें अमेरिका की भूमिका ने वैश्विक स्तर पर ऊर्जा आपूर्ति को प्रभावित किया है। इसका असर भारत के औद्योगिक शहरों तक पहुंच चुका है, जहां एलपीजी संकट ने धीरे-धीरे उद्योगों की रफ्तार को थाम लिया है।

सूरत के टेक्सटाइल और डायमंड उद्योग, जो हजारों-लाखों मजदूरों को रोजगार देते थे, अब इस संकट की चपेट में हैं। कई छोटे कारखानों में ताले लटक गए हैं, बड़े उद्योगों ने उत्पादन घटा दिया है और रोज़ कमाकर खाने वाले मजदूरों के सामने रोज़ी-रोटी का संकट खड़ा हो गया है। जब काम ही नहीं बचा, तो शहर में रहने का सवाल ही नहीं उठता। यही वजह है कि अब मजदूरों का एक बड़ा वर्ग अपने गांवों की ओर लौटने के लिए मजबूर हो गया है।

रविवार को उधना स्टेशन पर जो दृश्य देखने को मिला, वह इसी मजबूरी की चरम स्थिति थी। सुबह करीब 11 बजे अचानक स्टेशन पर भीड़ का सैलाब उमड़ पड़ा। उत्तर प्रदेश और बिहार जाने वाली ट्रेनों के प्लेटफॉर्म पर लोगों की लंबी कतारें लग गईं। हर कोई चाहता था कि किसी तरह ट्रेन में जगह मिल जाए, लेकिन सीमित सीटें और अनियंत्रित भीड़ ने हालात को विस्फोटक बना दिया।

भारतीय रेल पहले से ही गर्मियों की छुट्टियों के कारण यात्रियों के दबाव में थी। हर साल इस समय लोग अपने घरों को लौटते हैं, लेकिन इस बार स्थिति अलग थी। एलपीजी संकट ने इस मौसमी भीड़ को कई गुना बढ़ा दिया। रेलवे अधिकारियों के मुताबिक, पिछले दो-तीन महीनों से यात्रियों की संख्या लगातार बढ़ रही है, और अब समर वेकेशन के साथ यह संख्या दोगुनी हो गई है।

पुलिस और रेलवे सुरक्षा बल के जवान प्लेटफॉर्म पर तैनात थे और यात्रियों को लाइन में खड़ा करके ट्रेन में चढ़ाने की कोशिश कर रहे थे। शुरुआत में सब कुछ नियंत्रित लग रहा था, लेकिन जैसे ही ट्रेन प्लेटफॉर्म पर आई, लोगों का सब्र टूट गया। सीट पाने की होड़ में लोग लाइन तोड़कर आगे बढ़ने लगे। धक्का-मुक्की शुरू हुई और देखते ही देखते स्थिति बेकाबू हो गई।

भीड़ के दबाव में कई लोग गिर पड़े, महिलाएं और बच्चे घबराकर रोने लगे। कुछ लोग अपने परिवार के सदस्यों से बिछड़ गए। प्लेटफॉर्म पर चीख-पुकार मच गई। यह केवल एक अव्यवस्थित भीड़ नहीं थी, बल्कि वह पल था जब इंसान अपनी मजबूरी के आगे बेबस हो जाता है और नियम-कायदे सब पीछे छूट जाते हैं।

स्थिति को नियंत्रण में लाने के लिए पुलिस और आरपीएफ के जवानों को हल्का बल प्रयोग करना पड़ा। जैसे ही लाठीचार्ज शुरू हुआ, भगदड़ मच गई। लोग अपनी जान बचाने के लिए इधर-उधर भागने लगे। कुछ लोग तो लोहे की जालियों को पार करके स्टेशन से बाहर निकलने की कोशिश करने लगे। यह दृश्य किसी आपदा से कम नहीं था।

सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे वीडियो इस घटना की भयावहता को साफ दिखाते हैं। एक वीडियो में एक व्यक्ति अपने छोटे बच्चे को कंधे पर उठाए भीड़ से निकलने की कोशिश कर रहा है, तो दूसरे में एक महिला अपने सामान को संभालते हुए गिर पड़ती है। हर फ्रेम में डर, बेचैनी और असुरक्षा की झलक साफ दिखाई देती है।

रेलवे अधिकारियों का कहना है कि यात्रियों की सुविधा और सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए ही व्यवस्था बनाई गई थी, लेकिन कुछ लोगों ने लाइन तोड़कर स्थिति बिगाड़ दी। अधिकारियों के अनुसार, बार-बार अपील की गई कि लोग अनुशासन बनाए रखें, लेकिन जब भीड़ बेकाबू हो गई, तो हल्का बल प्रयोग करना जरूरी हो गया।

इस बीच, रेलवे ने यात्रियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए स्पेशल ट्रेनों का संचालन शुरू किया है। अब तक छह विशेष ट्रेनें चलाई जा चुकी हैं, और आगे भी जरूरत के अनुसार ट्रेनों की संख्या बढ़ाई जा सकती है। अधिकारियों का कहना है कि वे पूरी तरह मुस्तैद हैं और हर संभव प्रयास कर रहे हैं कि यात्रियों को परेशानी न हो।

लेकिन जमीनी सच्चाई यह है कि जब हजारों लोग एक साथ शहर छोड़ने लगते हैं, तो व्यवस्थाएं अक्सर छोटी पड़ जाती हैं। यह केवल ट्रेनों की संख्या बढ़ाने का मामला नहीं है, बल्कि यह उस व्यापक संकट का संकेत है, जो धीरे-धीरे गहराता जा रहा है।

इस पूरे घटनाक्रम में सबसे ज्यादा प्रभावित वे मजदूर हैं, जो रोज़ कमाकर अपना और अपने परिवार का पेट पालते हैं। उनके पास न तो बचत होती है और न ही लंबे समय तक बेरोजगारी झेलने की क्षमता। जैसे ही काम बंद होता है, उनका जीवन भी ठहर जाता है।

एक मजदूर, जो अपने गांव लौटने के लिए स्टेशन पर खड़ा था, ने कहा, "हम यहां कमाने आए थे, लेकिन अब काम ही नहीं है। किराया देना मुश्किल हो गया है, खाने के पैसे नहीं हैं। गांव में कम से कम अपना घर तो है, यहां तो सब कुछ खत्म हो गया।" यह केवल एक व्यक्ति की बात नहीं, बल्कि हजारों लोगों की सच्चाई है।

यह स्थिति हमें एक बार फिर यह सोचने पर मजबूर करती है कि हमारे शहरों का विकास किसके लिए है। जब तक सब कुछ ठीक चलता है, मजदूरों को शहर की रीढ़ माना जाता है, लेकिन जैसे ही संकट आता है, सबसे पहले वही वर्ग प्रभावित होता है।

उधना स्टेशन की यह भीड़ केवल एक घटना नहीं है, बल्कि यह उस बड़े बदलाव का संकेत है, जो देश के औद्योगिक और सामाजिक ढांचे में हो रहा है। वैश्विक संकट, स्थानीय समस्याएं और कमजोर व्यवस्थाएं मिलकर एक ऐसी स्थिति पैदा कर रही हैं, जिसमें सबसे ज्यादा नुकसान आम आदमी को उठाना पड़ रहा है।

मायूस चेहरों, भारी कदमों और उम्मीदों से भरे बैग के साथ घर लौटते ये लोग केवल यात्री नहीं हैं। वे उस सच्चाई के प्रतीक हैं, जहां सपनों का शहर भी एक दिन मजबूरी का शहर बन जाता है। उनकी यह यात्रा केवल दूरी तय करने की नहीं, बल्कि जीवन के एक कठिन अध्याय को पार करने की कोशिश है।

और शायद यही इस पूरी कहानी का सबसे बड़ा सच है—जब हालात साथ नहीं देते, तो सबसे मजबूत इंसान भी मजबूरी के आगे झुक जाता है, और तब वह केवल एक ही रास्ता देखता है—घर लौटने का।

गोवा की साध्वी सैल ने जीता मिस इंडिया वर्ल्ड 2026 का ताज भुवनेश्वर में सजा भव्य सौंदर्य और आत्मविश्वास का मंच

भुवनेश्वर में आयोजित देश की सबसे प्रतिष्ठित सौंदर्य प्रतियोगिताओं में से एक फेमिना मिस इंडिया 2026 का 61वां संस्करण इस बार कई मायनों में खास रहा। इस चमकदार और भावनाओं से भरे ग्रैंड फिनाले में साध्वी सैल ने फेमिना मिस इंडिया वर्ल्ड 2026 का ताज अपने नाम कर इतिहास रच दिया। गोवा की इस प्रतिभाशाली युवती की जीत ने न केवल उनके राज्य, बल्कि पूरे देश को गौरवान्वित किया है। इस प्रतियोगिता में महाराष्ट्र की राजनंदिनी पवार को फर्स्ट रनर-अप और अद्वैता को सेकेंड रनर-अप घोषित किया गया। जैसे ही विजेताओं के नाम सामने आए, सोशल मीडिया से लेकर राष्ट्रीय मीडिया तक हर जगह इन प्रतिभाओं की चर्चा शुरू हो गई।

इस बार का आयोजन केआईआईटी यूनिवर्सिटी के भव्य परिसर में हुआ, जहां मंच पर भारतीय संस्कृति, आधुनिकता और आत्मविश्वास का अद्भुत संगम देखने को मिला। कार्यक्रम की थीम "कनेक्टिंग द डॉट्स—डॉटर्स ऑफ दिस सॉइल" रखी गई थी, जिसने भारत की विविधता और एकता को एक ही मंच पर खूबसूरती से प्रस्तुत किया।

पूरे आयोजन के दौरान प्रतिभागियों ने केवल अपनी सुंदरता ही नहीं, बल्कि अपनी सोच, आत्मविश्वास और सामाजिक

समझ का भी प्रभावशाली प्रदर्शन किया। यही वजह रही कि यह प्रतियोगिता केवल एक ब्यूटी पेजेंट तक सीमित न रहकर एक व्यापक व्यक्तित्व प्रतियोगिता के रूप में उभरी।

इस प्रतियोगिता की यात्रा भी उतनी ही रोचक रही जितना इसका फिनाले। पिछले वर्ष नवंबर में देशभर में टैलेंट हंट के जरिए प्रतिभागियों का चयन किया गया था। इसके बाद चुनी गई टॉप 30 प्रतिभागियों ने मुंबई में आयोजित विशेष ग्रूमिंग सेशनों में हिस्सा लिया, जहां उन्हें मंच प्रस्तुति, व्यक्तित्व विकास और सामाजिक मुद्दों पर अपनी सोच को बेहतर तरीके से प्रस्तुत करने का प्रशिक्षण दिया गया।

ग्रैंड फिनाले से पहले प्रतिभागियों को ओडिशा की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत से भी रूबरू कराया गया। उन्होंने जगन्नाथ मंदिर पुरी और कोणार्क सूर्य मंदिर का दौरा किया, जिससे उन्हें भारतीय परंपराओं और इतिहास को करीब से समझने का अवसर मिला।

इस रंगारंग शाम को मनीष पॉल और सारा जेन डायस ने अपने चुटीले अंदाज में होस्ट किया। वहीं मंच पर जुबिन नौटियाल, लॉरेन गॉटलिब और ईशान खट्टर की प्रस्तुतियों ने कार्यक्रम को और भी जीवंत बना दिया।

जज पैनल भी इस आयोजन की प्रतिष्ठा को दर्शाता था। इसमें जीनत अमान, मधुर भंडारकर, दूती चंद, नेहा धूपिया, टेरेंस लुईस, सेलिना जेटली और अमाल मलिक जैसे कई प्रतिष्ठित नाम शामिल थे।

साध्वी सैल की जीत इसलिए भी खास मानी जा रही है क्योंकि उन्होंने प्रतियोगिता के हर चरण में संतुलित प्रदर्शन किया—चाहे वह रैंप वॉक हो, सवाल-जवाब का दौर हो या फिर सामाजिक मुद्दों पर उनकी सोच। उनकी स्पष्टता, आत्मविश्वास और विनम्रता ने जजों और दर्शकों दोनों का दिल जीत लिया।

अब इस जीत के साथ साध्वी सैल अंतरराष्ट्रीय मंच पर भारत का प्रतिनिधित्व करेंगी, जहां उनसे उम्मीद की जा रही है कि वे अपनी प्रतिभा और व्यक्तित्व के दम पर वैश्विक स्तर पर भी देश का नाम रोशन करेंगी।

यह आयोजन एक बार फिर यह साबित करता है कि भारतीय युवतियां केवल सौंदर्य तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे अपने विचार, आत्मविश्वास और उद्देश्य के साथ दुनिया के सामने एक मजबूत पहचान बनाने के लिए पूरी तरह तैयार हैं।

भुवनेश्वर में सजी इस भव्य शाम ने न केवल एक नई मिस इंडिया को जन्म दिया, बल्कि यह भी दिखाया कि भारत की बेटियां आज हर मंच पर अपनी प्रतिभा और दृढ़ संकल्प के साथ चमकने को तैयार हैं।

तेज रफ्तार की कीमत: चित्तौड़गढ़ में हिट एंड रन ने छीन ली दो जिंदगियां, परिवारों पर टूटा दुखों का पहाड़

चित्तौड़गढ़ जिले की सड़कों पर रविवार का दिन एक दर्दनाक हादसे का गवाह बन गया, जिसने न सिर्फ दो जिंदगियां छीन लीं, बल्कि कई परिवारों को गहरे सदमे में डाल दिया। सदर थाना क्षेत्र के निंबाहेड़ा इलाके में डोरिया से मंडावली मार्ग पर हुए इस हिट एंड रन हादसे ने एक बार फिर सड़क सुरक्षा और तेज रफ्तार के खतरों को उजागर कर दिया है। बताया जा रहा है कि रविवार को दो अलग-अलग बाइकों पर सवार चार लोग अपने गंतव्य की ओर जा रहे थे। सड़क पर सामान्य आवाजाही के बीच अचानक पीछे से आए एक तेज रफ्तार अज्ञात वाहन ने दोनों बाइकों को जोरदार टक्कर मार दी। टक्कर इतनी भीषण थी कि चारों लोग हवा में उछलकर सड़क पर दूर जा गिरे। कुछ ही पलों में एक सामान्य यात्रा चीख-पुकार और अफरा-तफरी में बदल गई।

इस हादसे में एक बाइक पर सवार किशन गायरी और उनकी पत्नी भगवती गायरी गंभीर रूप से घायल हो गए, जबकि दूसरी बाइक पर सवार ललित धाकड़ और दीपक वैष्णव भी बुरी तरह जख्मी हो गए।

हादसे के तुरंत बाद स्थानीय लोगों ने मानवता का परिचय देते हुए घायलों को संभाला और तुरंत नजदीकी अस्पताल पहुंचाने का प्रयास किया। लेकिन अस्पताल

पहुंचने तक बहुत देर हो चुकी थी। डॉक्टरों ने जांच के बाद पति-पत्नी को मृत घोषित कर दिया। यह खबर सुनते ही अस्पताल परिसर में सन्नाटा छा गया और परिजनों के बीच मातम फैल गया।

दूसरी ओर, गंभीर रूप से घायल दोनों युवकों की हालत चिंताजनक बताई जा रही है। प्राथमिक उपचार के बाद उन्हें बेहतर इलाज के लिए चित्तौड़गढ़ के उच्च चिकित्सा केंद्र में रेफर किया गया है, जहां उनका इलाज जारी है।

इस हादसे की सबसे दुखद और चिंताजनक बात यह रही कि टक्कर मारने के बाद आरोपी वाहन चालक मौके से फरार हो गया। दुर्घटना के बाद उसने न तो रुककर घायलों की मदद की और न ही अपनी जिम्मेदारी निभाई। यह घटना न केवल लापरवाही का उदाहरण है, बल्कि मानवीय संवेदनाओं की कमी को भी उजागर करती है।

सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और स्थिति का जायजा लिया। आवश्यक कानूनी प्रक्रिया पूरी करने के बाद दोनों शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए मोर्चरी भेज दिया गया। साथ ही पुलिस ने अज्ञात वाहन और उसके चालक की तलाश शुरू कर दी है।

जांच के तहत घटनास्थल के आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाली जा रही है, ताकि आरोपी की पहचान की जा सके। पुलिस का कहना है कि जल्द ही वाहन और चालक का पता लगा लिया जाएगा और उसके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।

इस घटना के बाद मृतकों के परिजनों में भारी आक्रोश है। उनका कहना है कि आरोपी को जल्द से जल्द गिरफ्तार कर कड़ी से कड़ी सजा दी जाए, ताकि भविष्य में इस तरह की घटनाओं पर रोक लग सके। परिजनों का दर्द और गुस्सा इस बात का प्रतीक है कि एक पल की लापरवाही किस तरह कई जिंदगियों को हमेशा के लिए बदल देती है।

यह हादसा एक बार फिर यह सवाल खड़ा करता है कि सड़कों पर तेज रफ्तार और लापरवाही पर कब लगाम लगेगी। हिट एंड रन की घटनाएं लगातार सामने आ रही हैं, लेकिन इसके बावजूद लोग नियमों का पालन करने में लापरवाही बरतते हैं।

विशेषज्ञों का मानना है कि केवल सख्त कानून ही नहीं, बल्कि लोगों में जागरूकता और जिम्मेदारी की भावना भी जरूरी है। जब तक चालक खुद अपनी जिम्मेदारी नहीं समझेंगे, तब तक इस तरह की घटनाओं को पूरी तरह रोक पाना मुश्किल होगा।

चित्तौड़गढ़ की इस दर्दनाक घटना ने दो परिवारों की खुशियां छीन ली हैं और कई जिंदगियों को गहरे जख्म दे दिए हैं। अब सबकी नजर पुलिस की कार्रवाई पर टिकी है—कि कब तक आरोपी पकड़ा जाता है और पीड़ित परिवारों को न्याय मिल पाता है।

स्मार्ट मीटर पर बढ़ता सियासी घमासान: आरोप, प्रदर्शन और भरोसे की जंग

लखनऊ में स्मार्ट मीटर का मुद्दा अब केवल तकनीकी या उपभोक्ता सुविधा का विषय नहीं रह गया है, बल्कि यह पूरी तरह से राजनीतिक बहस का केंद्र बन चुका है। बिजली बिल में अचानक बढ़ोतरी की शिकायतों ने जहां आम जनता को परेशान किया है, वहीं इस मुद्दे ने राजनीतिक दलों को आमने-सामने ला खड़ा किया है। समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव ने इस मुद्दे को जोर-शोर से उठाते हुए राज्य की भाजपा सरकार पर तीखा हमला बोला है। उन्होंने हमीरपुर की महिलाओं का एक वीडियो साझा कर दावा किया कि स्मार्ट मीटर के नाम पर जनता के साथ "ठगी" हो रही है। उनके अनुसार, मीटरों की रीडिंग जरूरत से ज्यादा आ रही है, जिससे बिजली बिल असामान्य रूप से बढ़ गए हैं और आम आदमी आर्थिक दबाव में आ गया है।

अखिलेश यादव ने आरोप लगाया कि मीटर लगाने के ठेके देने से पहले ही कंपनियों से कथित तौर पर कमीशन लिया जाता है और बाद में उसी की भरपाई के लिए मीटरों को तेज चलने के लिए 'सेट' किया जाता है। उनका यह बयान सीधे तौर पर सरकार की नीयत और व्यवस्था पर सवाल खड़ा करता है। राजनीतिक तापमान तब और बढ़ गया जब उन्होंने स्मार्ट मीटर की तुलना इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन से कर दी। उन्होंने कहा कि जैसे ईवीएम को लेकर विपक्ष सवाल उठाता रहा है, वैसे ही बिजली मीटरों में भी हेराफेरी की जा रही है। इस बयान ने सियासी बहस को और तीखा बना दिया है।

दूसरी ओर, इस पूरे विवाद की जड़ में आम लोगों की वास्तविक परेशानी भी साफ नजर आ रही है। हमीरपुर के लक्ष्मीबाई तिराहा स्थित कांशीराम

कॉलोनी में बड़ी संख्या में महिलाएं सड़कों पर उतर आईं और जोरदार प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारियों का कहना है कि स्मार्ट मीटर लगने के बाद उनके बिजली बिल कई गुना बढ़ गए हैं, जबकि उनकी खपत में कोई खास बदलाव नहीं हुआ है। महिलाओं ने न केवल नारेबाजी की, बल्कि अधिकारियों के सामने अपनी शिकायतें भी दर्ज कराईं। उनका साफ कहना है कि यदि समस्या का समाधान नहीं हुआ तो वे और बड़ा आंदोलन करने को मजबूर होंगी। यह प्रदर्शन इस बात का संकेत है कि मामला केवल राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप तक सीमित नहीं है, बल्कि जमीनी स्तर पर असंतोष बढ़ता जा रहा है।

दरअसल, स्मार्ट मीटर को लेकर पूरे उत्तर प्रदेश में अलग-अलग जिलों से शिकायतें सामने आ रही हैं। कई उपभोक्ताओं का कहना है कि नए मीटर लगने के बाद उनके बिल अचानक बढ़ गए हैं, जिससे उनके घरेलू बजट पर असर पड़ रहा है। खासकर निम्न और मध्यम वर्ग के परिवारों के लिए यह एक बड़ी चिंता बन गई है।

हालांकि, बिजली विभाग का पक्ष इससे अलग है। विभाग का दावा है कि स्मार्ट मीटर पारदर्शिता लाने और सही बिलिंग सुनिश्चित करने के लिए लगाए जा रहे हैं। उनके अनुसार, ये मीटर वास्तविक खपत के आधार पर बिल तैयार करते हैं और इसमें किसी प्रकार की गड़बड़ी की संभावना कम होती है। विभाग यह भी कहता है कि पुराने मीटरों में अक्सर रीडिंग की त्रुटियां होती थीं, जिन्हें दूर करने के लिए यह नई तकनीक लाई गई है।

यहीं से असली टकराव शुरू होता है—एक तरफ सरकार और विभाग तकनीकी सुधार और पारदर्शिता की बात कर रहे हैं, तो दूसरी ओर उपभोक्ता अपने बढ़ते बिल और आर्थिक बोझ को लेकर परेशान हैं। विपक्ष इस असंतोष को मुद्दा बनाकर सरकार को घेर रहा है, जिससे यह मामला और ज्यादा संवेदनशील हो गया है।

विशेषज्ञों का मानना है कि स्मार्ट मीटर तकनीक अपने आप में खराब नहीं है, लेकिन इसके क्रियान्वयन में पारदर्शिता और भरोसे की कमी से विवाद पैदा हो सकता है। यदि उपभोक्ताओं को यह भरोसा नहीं होगा कि मीटर सही तरीके से काम कर रहे हैं, तो विरोध स्वाभाविक है। ऐसे में जरूरी है कि सरकार और बिजली विभाग लोगों की शिकायतों को गंभीरता से लें और तकनीकी जांच के जरिए उनकी शंकाओं का समाधान करें। यह भी महत्वपूर्ण है कि उपभोक्ताओं को स्मार्ट मीटर के काम करने के तरीके के बारे में जागरूक किया जाए। कई बार जानकारी के अभाव में भी भ्रम की स्थिति पैदा हो जाती है, जिससे विवाद बढ़ता है।

फिलहाल, लखनऊ से उठी यह बहस पूरे प्रदेश में फैल चुकी है और आने वाले समय में यह एक बड़ा राजनीतिक मुद्दा बन सकती है। अब सबकी नजर इस बात पर टिकी है कि सरकार इस मामले में क्या कदम उठाती है—क्या वह तकनीकी जांच कराकर लोगों का भरोसा बहाल करेगी या यह मुद्दा सियासत की भेंट चढ़ता रहेगा।

एक बात साफ है कि स्मार्ट मीटर केवल बिजली बिल का मामला नहीं रह गया है, बल्कि यह जनता के भरोसे, पारदर्शिता और राजनीति के त्रिकोण में फंस चुका है—जहां हर पक्ष अपनी-अपनी दलील के साथ खड़ा है और समाधान की राह अभी भी तलाश की जा रही है।

होर्मुज में तनाव के बीच भारतीय टैंकर 'देश गरिमा' सुरक्षित, लेकिन फायरिंग की घटनाओं ने बढ़ाई चिंता

नई दिल्ली। खाड़ी क्षेत्र में बढ़ते भू-राजनीतिक तनाव के बीच भारत के लिए राहत और चिंता—दोनों तरह की खबरें एक साथ सामने आई हैं। भारतीय कच्चे तेल का टैंकर 'देश गरिमा' 18 अप्रैल को संवेदनशील होर्मुज जलडमरूमध्य को सुरक्षित पार कर चुका है और इसके 22 अप्रैल को मुंबई बंदरगाह पहुंचने की उम्मीद है। जहाज पर सवार 31 भारतीय नाविक पूरी तरह सुरक्षित बताए गए हैं, जो इस अस्थिर माहौल में एक बड़ी राहत की खबर है।

लेकिन इसी बीच खाड़ी से आई दूसरी खबरों ने समुद्री सुरक्षा को लेकर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। जानकारी के मुताबिक, दो अन्य भारतीय जहाज—वीएलसीसी सम्नार हेराड और बल्क कैरियर जग अर्नव—पर अज्ञात स्रोतों से गोलीबारी की गई। यह घटनाएं उस समय हुईं जब ये जहाज उसी संवेदनशील समुद्री क्षेत्र से गुजर रहे थे, जहां इस समय वैश्विक शक्तियों के बीच टकराव चरम पर है।

गोलीबारी की इन घटनाओं के दौरान दोनों जहाजों के कप्तानों ने तुरंत सूझबूझ का परिचय देते हुए जहाजों को सुरक्षित दिशा में मोड़ लिया। यह निर्णय न केवल जहाजों को संभावित बड़े खतरे से बचाने में कारगर साबित हुआ, बल्कि सवार क्रू मेंबर्स की जान भी सुरक्षित रही। अधिकारियों के अनुसार, इस घटना में किसी भी नाविक के घायल होने की सूचना नहीं है, जो हालात को देखते हुए राहत भरी बात है।

'देश गरिमा' का सुरक्षित निकलना ऐसे समय में बेहद अहम माना जा रहा है, जब ईरान, अमेरिका और इजराइल के बीच तनाव लगातार बढ़ रहा है। इस तनाव का सीधा असर होर्मुज जलडमरूमध्य जैसे महत्वपूर्ण समुद्री मार्ग पर दिखाई दे

रहा है, जो दुनिया के सबसे व्यस्त और संवेदनशील तेल परिवहन मार्गों में गिना जाता है।

विशेषज्ञों के मुताबिक, विश्व के लगभग 20 प्रतिशत कच्चे तेल की आपूर्ति इसी मार्ग से होकर गुजरती है। ऐसे में यहां किसी भी तरह की अस्थिरता का असर न केवल क्षेत्रीय बल्कि वैश्विक अर्थव्यवस्था पर भी पड़ सकता है। हाल के दिनों में इस क्षेत्र में जहाजों की आवाजाही पर कड़ी निगरानी रखी जा रही है, और कई मामलों में जहाजों को रोका या दिशा बदलने के लिए मजबूर किया गया है। भारत सरकार इस पूरे घटनाक्रम पर लगातार नजर बनाए हुए है। विदेश मंत्रालय, पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय और विदेशों में स्थित भारतीय दूतावासों के बीच लगातार समन्वय स्थापित किया जा रहा है। सरकार का प्राथमिक उद्देश्य भारतीय जहाजों और नाविकों की सुरक्षा सुनिश्चित करना है, खासकर ऐसे समय में जब समुद्री मार्गों पर जोखिम तेजी से बढ़ रहा है। सूत्रों के अनुसार, इस मामले को गंभीरता से लेते हुए भारत ने ईरान के राजदूत को तलब कर समुद्री सुरक्षा को लेकर अपनी चिंताओं से अवगत कराया है। यह कूटनीतिक कदम इस बात का संकेत है कि भारत इस मुद्दे को केवल सुरक्षा ही नहीं, बल्कि रणनीतिक दृष्टिकोण से भी देख रहा है।

खाड़ी क्षेत्र में जारी तनाव के चलते कई शिपिंग कंपनियों ने अपने मार्गों की समीक्षा शुरू कर दी है। कुछ कंपनियां वैकल्पिक रास्तों की तलाश कर रही हैं, जबकि कुछ ने अस्थायी रूप से अपने जहाजों की आवाजाही सीमित कर दी है। इससे वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला पर दबाव बढ़ने की आशंका है।

विशेषज्ञों का मानना है कि यदि स्थिति और बिगड़ती है, तो तेल की कीमतों में उछाल आ सकता है और ऊर्जा संकट गहराने की संभावना भी बढ़ सकती है। ऐसे में भारत जैसे बड़े तेल आयातक देशों के लिए यह स्थिति चुनौतीपूर्ण बन सकती है।

'देश गरिमा' का सुरक्षित मुंबई पहुंचना न केवल एक सफल समुद्री संचालन का उदाहरण होगा, बल्कि यह भी दिखाएगा कि कठिन परिस्थितियों में भी भारतीय शिपिंग और नाविक अपनी जिम्मेदारियों को बखूबी निभा रहे हैं। हालांकि, अन्य जहाजों पर हुई फायरिंग की घटनाएं यह स्पष्ट कर देती हैं कि खतरा अभी टला नहीं है। आने वाले दिनों में होर्मुज जलडमरूमध्य में स्थिति कैसी रहती है, यह पूरी दुनिया के लिए महत्वपूर्ण होगा। फिलहाल, भारत सहित कई देश अपने समुद्री हितों और नागरिकों की सुरक्षा को लेकर पूरी तरह सतर्क हैं, क्योंकि इस क्षेत्र में जरा सी चूक बड़े संकट का कारण बन सकती है।